स्मृति-पत्रिका

जैपुरिया-प्रतिष्ठान के संस्थापक
स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जी जैपुरिया

स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जी जैपुरिया की

पुण्य - स्मृति में संस्थापित

प्रमुख - ट्रस्ट

* सेठ आनन्दराम जैपुरिया ट्रस्ट

* जैदेई देवी आनन्दराम जैपुरिया पब्लिक चैरिटेबिल ट्रस्ट

* ए० एम० जैपुरिया पब्लिक चैरिटेबिल ट्रस्ट

* सुरजी देवी कुंजलाल जैपुरिया चैरिटेबिल ट्रस्ट

सम्पर्क - सूत्र :-

स्वदेशी हाउस, कानपुर

आशुतोष भगवान श्री आनन्देश्वर महादेव
नवलगढ़ (जैपुर)

करचरण कृतं वाक्कायजं कर्मजंवा,
श्रवण नयनजंवा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितमविहितंवा सर्वमेतत्क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ।।

जैपुरिया – प्रतिष्ठान के संस्थापक

स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जी जैपुरिया

की पुण्य – स्मृति में

जैपुरिया – न्यासों (ट्रस्टों) द्वारा संस्थापित

लोक – कल्याण के संस्थान

प्रगति और कार्य – विवरण

१९६८

स्मृति - पत्रिका

अनुक्रम

* आमुख
* प्राक्कथन
* बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय

शिक्षा
* सेठ आनन्दराम जैपुरिया कालेज, कलकत्ता
* सेठ आनन्दराम जैपुरिया इन्टर कालेज, आनन्दनगर
* सेठ पूर्णमल जैपुरिया जूनियर हाई-स्कूल, आनन्दनगर
* गणेश प्राइमरी पाठशाला, आनन्दनगर
* सेठ गजाधर जैपुरिया विद्यामन्दिर उच्चमाध्यमिक विद्यालय, नवलगढ़
* श्री जैपुरिया हायर सेकेन्ड्री स्कूल, पाण्डवेश्वर (बर्दवान)
* श्री आनन्द शुगर मिल्स प्राइमरी पाठशाला, खलीलाबाद
* श्रीमती नानीबाई जैपुरिया बालिका विद्यालय, मण्डावा (राजस्थान)

चिकित्सा
* सेठ आनन्दराम जैपुरिया नेत्र-चिकित्सालय, नवलगढ़

आवास एवं मन्दिर
* सेठ आनन्दराम जैपुरिया स्मृति भवन, वाराणसी
* सेठ आनन्दराम जैपुरिया स्मृति भवन, वृन्दावन (मथुरा)
* भक्तराज पवनसुत श्री हनुमान जी का मन्दिर, वृन्दावन
* जैपुरिया अतिथि भवन, विन्ध्याचल (मिर्जापुर)

निर्माणाधीन
* सेठ आनन्दराम जैपुरिया स्मृति भवन, हरिद्वार
* सेठ आनन्दराम जैपुरिया विद्या-मन्दिर, कानपुर
* सेठ आनन्दराम जैपुरिया नागरिक केन्द्र, दिल्ली :—
  (अ) सेठ आनन्दराम जैपुरिया पब्लिक हाल
  (ब) सेठ आनन्दराम जैपुरिया पुस्तकालय
  (स) सेठ आनन्दराम जैपुरिया आर्ट गैलरी
* सेठ आनन्दराम जैपुरिया विज्ञान-भवन
  (पं० मदन मोहन मालवीय डिग्री कालिज, रायबरेली)

जैपुरिया-प्रतिष्ठान के संस्थापक

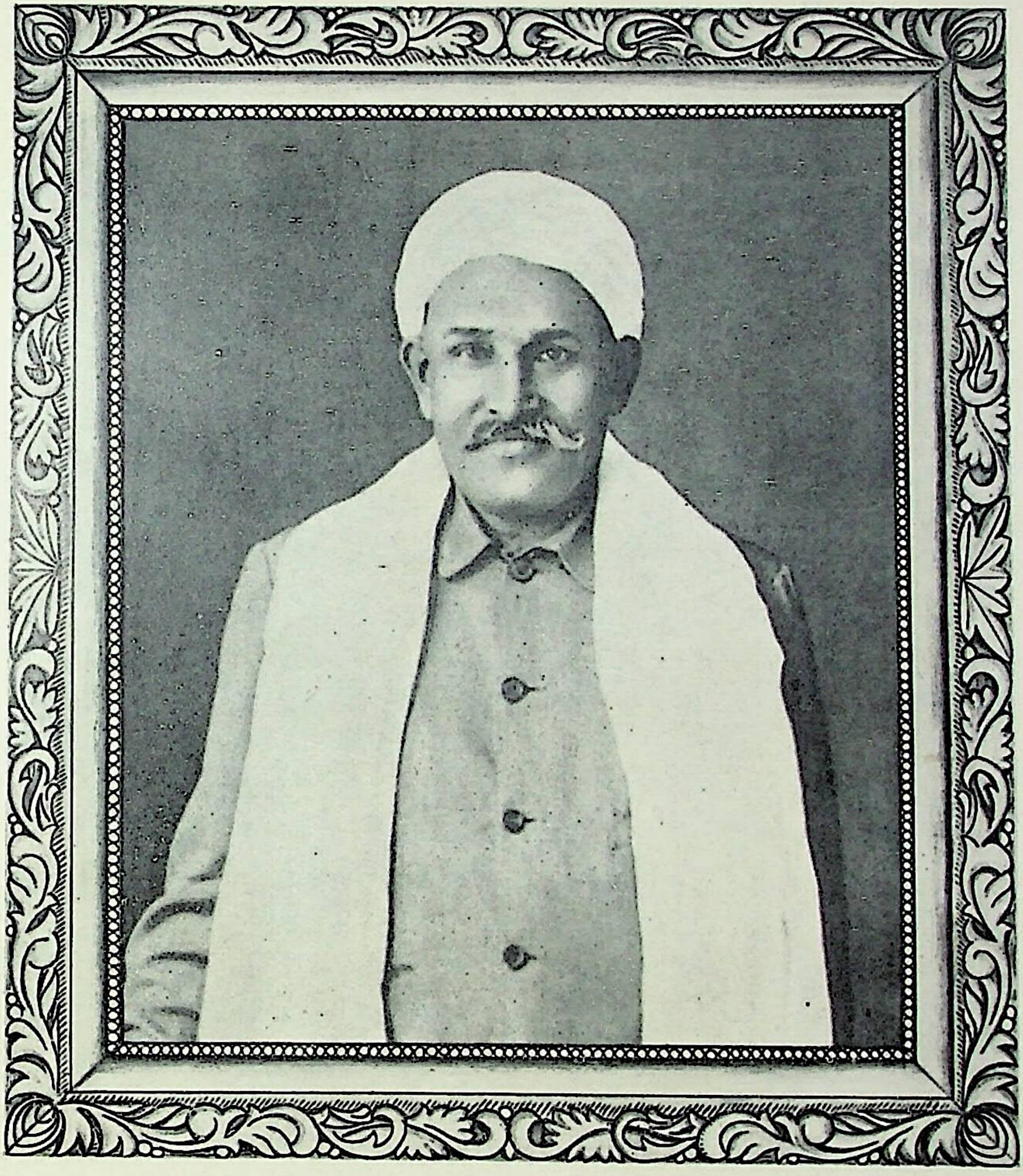

स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जी जैपुरिया

जन्म — विक्रम संवत् १९२८ आश्विन शुक्ल १५

काशीवास — विक्रम संवत् १९९६ मार्गशीर्ष शुक्ल ११

।। श्री गणेशायनमः ।।

आमुख

मंगलमय आशुतोष भगवान श्री आनन्देश्वर महादेव की असीम अनुकम्पा से मेरे पूज्य पिता स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जी जैपुरिया की पुण्य-स्मृति में जैपुरिया - बान्धवों द्वारा संस्थापित विभिन्न लोक-सेवी संस्थानों की 'स्मृति–पत्रिका' सर्व-साधारण की सेवा में प्रस्तुत है।

जैपुरिया–बान्धवों द्वारा आज देश भर में यथासम्भव जितने भी लोकोपयोगी कृत्य सम्पन्न हो रहे हैं, उन सबके मूल में मेरे स्वर्गीय पूज्य पिताजी की ही पावन-प्रेरणा निहित है। भारत के औद्योगिक आकाश पर अनेक ऐसे प्रकाशमान नक्षत्र दृष्टिगोचर होते हैं जिनकी कर्मठता, औद्योगिक-क्षमता, दानशीलता एवं लोकसेवी भावना जन-जन के लिए प्रेरणास्पद होती है। जैपुरिया-प्रतिष्ठान के संस्थापक स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जी जैपुरिया ऐसी ही विभूतियों में से थे। स्वभाव और प्रकृति से लोक–कल्याण और राष्ट्रीयता में गहरा विश्वास रखने वाले उन देवात्मा का समस्त जीवन ही परोपकार के कार्यों में व्यतीत हुआ।

पूज्य पिताजी न केवल असाधारण प्रतिभा-सम्पन्न कुशल व्यवसायी ही थे अपितु सामाजिक और व्यापारिक-जगत की उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाने की उनमें अद्‌भुत क्षमता विद्यमान थी। अपने जीवन-काल में उन्होंने न जाने कितनी पंचायतों की मध्यस्थता की होगी जिनके फलस्वरूप अनेक प्रतिष्ठित औद्योगिक घरानों की प्रतिष्ठा और साख बच गयी। भारतीय संस्कृति के तो वे मूर्तिमान प्रतीक ही थे। विक्रम संवत् १९९६ में उन्होंने काशी में अपना भौतिक शरीर त्यागने के कुछ काल पूर्व एक ट्रस्ट की स्थापना की थी जिसके द्वारा लोक-सेवा के इन मंगलमय अनुष्ठानों का श्रीगणेश हुआ।

धर्म-जगत के प्राण, आदर्शों के निष्ठावान पुजारी, परोपकार के लिये सदैव तत्पर स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जी जैपुरिया के प्रति अपनी विनम्र भावपूर्ण और सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए जैपुरिया-बान्धवों ने यह निश्चय किया कि स्थान-स्थान पर लोकसेवा के ऐसे कीर्तिमान स्थापित किये जायें जिनसे न केवल सर्व-साधारण जन लाभान्वित हो सकें अपितु उनकी पुनीत स्मृति भी अक्षुण्ण रह सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये जैपुरिया-बान्धवों द्वारा अनेक ट्रस्ट संचालित किये गये जिनके द्वारा सर्व साधारण की आवश्यकताओं की यथा सम्भव पूर्ति होती रहती है। प्रस्तुत 'स्मृति-पत्रिका' में सर्व-साधारण की जानकारी के हेतु इन ट्रस्टों द्वारा संचालित कतिपय प्रमुख लोकसेवी संस्थाओं का परिचय दिया गया है। जनता-जनार्दन ने जिस प्रेम से इन सेवाओं को अंगीकार कर हमारा उत्साहवर्धन किया है, उसके प्रति जैपुरिया-परिवार हार्दिक रूप से कृतज्ञ है।

लोक-सेवा का महान क्षेत्र अत्यन्त व्यापक और विराट है किन्तु फिर भी 'समुद्र में बूंद' के समान हमारा यह यत्किंचित प्रयास जिन पवित्र आदर्शों और उद्देश्यों के साथ विकासमान है, वह अत्यन्त शुभ और कल्याणप्रद है।

प्रभु हमें वह शक्ति दे जिससे सार्वजनिक कल्याण और लोक-सेवा के क्षेत्र में हम अधिक सक्रिय और सचेष्ट होकर तन-मन-धन सार्थक कर सकें।

"सेवाधर्मो परम गहनो योगिनामप्यगम्यः।"

शुभ - दीपावली

कार्तिक कृष्णा ३०, विक्रम संवत् २०२५

२१ अक्टूबर, १९६८

प्राक्कथन

देश भर में विविध स्थानों पर जैपुरिया चैरिटेबिल ट्रस्टों द्वारा सार्वजनिक उपयोग के जो निर्माण-कार्य सम्पन्न किये गये हैं, उनका यह संक्षिप्त विवरण 'स्मृति पत्रिका' के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है।

मानव-शरीर की भाँति प्रत्येक संस्था और संगठन के उद्भव-पराभव के कुछ प्राकृतिक नियम होते हैं किन्तु जिस सुकार्य के संस्थापन में उद्देश्य और भावनाओं में जितनी पवित्रता, अभिरुचि और निःस्वार्थता होगी, उतनी ही द्रुत-गति से वह सुकार्य पुष्पित-पल्लवित होकर जन-जन के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगा। सौभाग्यवश, इन सभी लोकोपयोगी संस्थाओं की प्रेरणा के केन्द्र-बिन्दु मेरे स्वर्गीय पितामह सेठ आनन्दराम जी जैपुरिया थे जिन्होंने लोक-सेवा को अपने जीवन का मूल-मंत्र मानकर जैपुरिया-वंश की भावी पीढ़ी के सम्मुख एक महान आदर्श उपस्थित किया। उनके द्वारा निर्देशित मार्ग का अनुसरण कर हमें गौरव की अनुभूति होती है और इसीलिए उन महान देवात्मा की पुण्य-स्मृति में हम अपनी श्रद्धा भक्ति व्यक्त करने के हेतु जनोपयोगी-कार्यों की लड़ी में नव-निर्माण का एक एक पुष्प पिरोकर राष्ट्र की सेवा में समर्पित कर रहे हैं।

यह सचमुच हमारा सौभाग्य है कि हमारे इन अल्प-प्रयत्नों की देशव्यापी सराहना हुई है जिससे हमें अपने कर्तव्य-पालन में निरन्तर बल मिला है। सचमुच लोक-कल्याण के इन कार्यों की जो मंगल-ज्योति मेरे स्वर्गीय पितामह के कर-कमलों द्वारा प्रस्फुटित हुई, उसके निरन्तर विकास और संवर्धन का श्रेय मेरे पूज्य पिता सेठ मुंगतूराम जी जैपुरिया को है जिनके सहज आशीष और अनुभवी निर्देशन से हम अपने कर्तव्य-पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। मेरे पितामह के सदगुणों, स्वभाव और परम्पराओं को मेरे पूज्य पिता जी ने अपने जीवन में बड़े स्वाभाविक रूप से ग्रहण किया है। जैपुरिया-प्रतिष्ठान का औद्योगिक-विस्तार और जन-कल्याण कार्यों की यह प्रगति उन्हीं की प्रतिभा का चमत्कार है। अतः इस सुअवसर पर उनके चरणों में अत्यन्त विनत-भाव से हमारा नत होना स्वाभाविक है।

शिक्षा, चिकित्सा, आवास तथा अन्य विविध समाज-सेवाओं के क्षेत्र में हमारा यह यत्किंचित प्रयास यहीं तक सीमित नहीं है अपितु भविष्य में इस प्रकार की अनेक कल्याणकारी योजनायें ट्रस्टियों के विचाराधीन हैं। यद्यपि इस 'स्मृति-पत्रिका' में सभी संस्थाओं का विस्तार से परिचय देना सम्भव नहीं है किन्तु फिर भी इनमें दिये गये तथ्यों द्वारा सर्व-साधारण को यथोचित जानकारी प्राप्त हो सकती है। जिन महानुभावों द्वारा समय-समय पर हमें इन संस्थाओं के विषय में बहुमूल्य सुझाव, परामर्श और निर्देशन प्राप्त होते रहे हैं और जिन्होंने अपने प्रेरणास्पद शब्दों और विचारों से हमारे प्रयत्नों को प्रोत्साहित किया है, उन सभी के प्रति मैं अपने परिवार और ट्रस्ट की ओर से हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूं।

मुझे आशा है कि सार्वजनिक-कल्याण के लिये किये गये हमारे इन प्रयत्नों को जनता-जनार्दन का बहुमूल्य आशीर्वाद प्राप्त होगा। राष्ट्र, धर्म और देश की कोटि-कोटि जनता की सेवा में हमारी यह आसक्ति सदैव बनी रहे—हमें इसी आशीष की याचना है।

—साभिवादन

शुभ - दीपावली
कार्तिक कृष्णा ३०, विक्रम संवत् २०२५
२१ अक्तूबर, १९६८

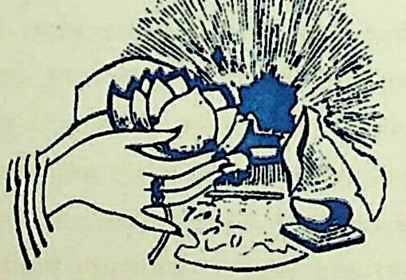

बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय

भारत के औद्योगिक - मंच पर ऐतिहासिक राजस्थान स्थित नवलगढ़ (जैपुर) के जैपुरिया-बान्धवों का अवतरण लोक-कल्याण की दृष्टि से अत्यन्त सार्थक सिद्ध हुआ है। पिछले तीन-चार दशकों में उन्होंने अपने औद्योगिक - विस्तार के साथ साथ सार्वजनिक - कल्याण के जो विविध कार्य किये हैं, समाज के सभी वर्गों द्वारा उनकी भूरि-भूरि सराहना हुई है।

उत्तर प्रदेश की औद्योगिक राजधानी कानपुर में जैपुरिया-बान्धवों द्वारा संचालित स्वदेशी काटन मिल्स कम्पनी लिमिटेड सूती वस्त्रों के उत्पादन में उत्तर भारत की प्रमुख इकाई है। यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि 'स्वदेशी' अपने प्रबन्ध-संचालकों की योग्यता और पटुता से अपने स्तर को कायम रख कर बहुसंख्यक परिवारों की आजीविका का साधन बनी हुई है। 'स्वदेशी' की अनेक शाखायें है जिनमें एलाहाबाद के निकट नैनी में स्थित स्वदेशी काटन मिल्स मुख्यतः कृत्रिम रूई (स्टेपुल फाइबर) एवं रूई से सूते का उत्पादन करती है। दक्षिण भारत स्थित पांडिचेरी में भी 'स्वदेशी' की शाखा सुचारु रूप से कार्य कर रही है। इसके अतिरिक्त उदयपुर, राजस्थान में भी उदयपुर काटन मिल्स के नाम से 'स्वदेशी' की शाखा सुचारु रूप से सूत के उत्पादन द्वारा देश की उन्नति में सहयोग दे रही हैं। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर और बस्ती जिले में जैपुरिया बान्धवों द्वारा स्थापित गणेश शुगर मिल्स, आनन्दनगर तथा श्री आनन्द शुगर मिल्स, खलीलाबाद नामक शक्कर की दो प्रमुख मिलें हैं। पश्चिम बंगाल में बर्दवान जिले में जैपुरिया कजोरा कोलियरीज एवं सामला कोलियरीज नामक कोयले के प्रतिष्ठान हैं जिनके अन्तर्गत दख्खिन खंड, छत्रिसगोंडा, केन्द्रा, रामनगर, सामला, आदि स्थानों पर कोयले की खाने हैं। औद्योगिक समृद्धि की ये सम्भावनायें निरन्तर विकासमान हैं और अभी हाल ही में पूर्वी उत्तर प्रदेश के पिछड़े इलाके मऊनाथभंजन में जैपुरिया-बान्धवों ने 'स्वदेशी काटन मिल्स, मऊनाथभंजन' के नाम से नयी मिल की स्थापना की है जिसका निर्माण कार्य चल रहा है। देश की औद्योगिक समृद्धि के लिये जैपुरिया-प्रतिष्ठान की यह प्रगति निश्चय ही शुभ है।

जैपुरिया-बान्धवों की औद्योगिक-सफलताओं का एक प्रमुख कारण यह भी है कि इन्होंने जहां कहीं भी अपने व्यावसायिक - प्रतिष्ठान स्थापित किये, वहीं जन-साधारण की सुख-सुविधाओं और श्रम-कल्याण के कार्यों पर विशेष ध्यान दिया है। प्राकृतिक-प्रकोप, बाढ़, भूचाल आदि संकटों में, कुम्भ, अर्द्ध-कुम्भ, मेलों, त्यौहारों और पर्वों पर, राष्ट्रीय संकट के कठिन अवसरों पर अथवा जन-समाज की आवश्यकताओं को देखते हुए प्रतिष्ठान के श्रम-कल्याण विभाग अथवा विभिन्न ट्रस्टों की ओर से स्थान-स्थान पर कैम्प आयोजित कर सेवा-कार्य किये जाते हैं। शिक्षा, चिकित्सा एवं आवास के क्षेत्र में अनेक महाविद्यालय, विद्यालय, चिकित्सालय तथा अतिथि-भवन स्थापित किये जा चुके हैं। इनके अतिरिक्त धार्मिक आयोजनों में जैपुरिया परिवार की विशेष रुचि है और भारत भर के अनेक चोटी के सन्त महात्मा विद्वान इन आयोजनों में कृपापूर्वक पधारते रहते हैं। ट्रस्टों द्वारा व्यक्तिगत रूप से आवश्यकताग्रस्त व्यक्तियों, संस्थाओं, विद्यार्थियों, रोगियों, और अनाथ विधवाओं को सहायतायें सुलभ रहती हैं।

आनुवंशिक परम्परानुसार जैपुरिया प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठापक स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जी जैपुरिया के सुपुत्र सेठ मुंगतूराम जी जैपुरिया स्वयं भारतीय संस्कृति और आचार-विचार के श्रद्धालु उपासक हैं। औद्योगिक-समृद्धि के साथ साथ लोकसेवा के क्षेत्र में उन्होंने अपार यश और ख्याति का अर्जन किया है। उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री सीताराम जी जैपुरिया राज्य-सभा के सम्मानित सदस्य होने के साथ साथ सामाजिक-क्षेत्र की एक लोकप्रिय विभूति हैं। 'रोटरी इण्टरनेशनल' के माध्यम से उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। श्री सीताराम जी जैपुरिया के अनुज डा० राजाराम जी जैपुरिया 'लायन्स इण्टरनेशनल' के प्रभावपूर्ण सदस्य होने के साथ साथ उद्योग-जगत की सबसे आधुनिक पीढ़ी के लोकप्रिय व्यक्ति हैं। आपको इसी वर्ष आगरा विश्वविद्यालय ने आपके प्रभावशाली शोध-प्रबन्ध पर 'डाक्टरेट' की उपाधि प्रदान की है। पुरातन के प्रति आस्थावान होते हुए भी जैपुरिया-बान्धव नवीनता के समर्थक हैं।

राष्ट्र-निर्माण और जन-मंगल की दिशाओं में जन-सेवा के हेतु कृत-संकल्प होकर जैपुरिया-बान्धव जनता-जनार्दन की सुख-समृद्धि के नूतन दीप जलाते चलेंगे, ऐसी ही उनसे आशा है।

ईश्वर करे, 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' की यह मंगल-प्रेरणा जन - जन के लिये सुखकर हो।

—सम्पादक

सेठ आनन्दराम जैपुरिया कालेज

कलकत्ता

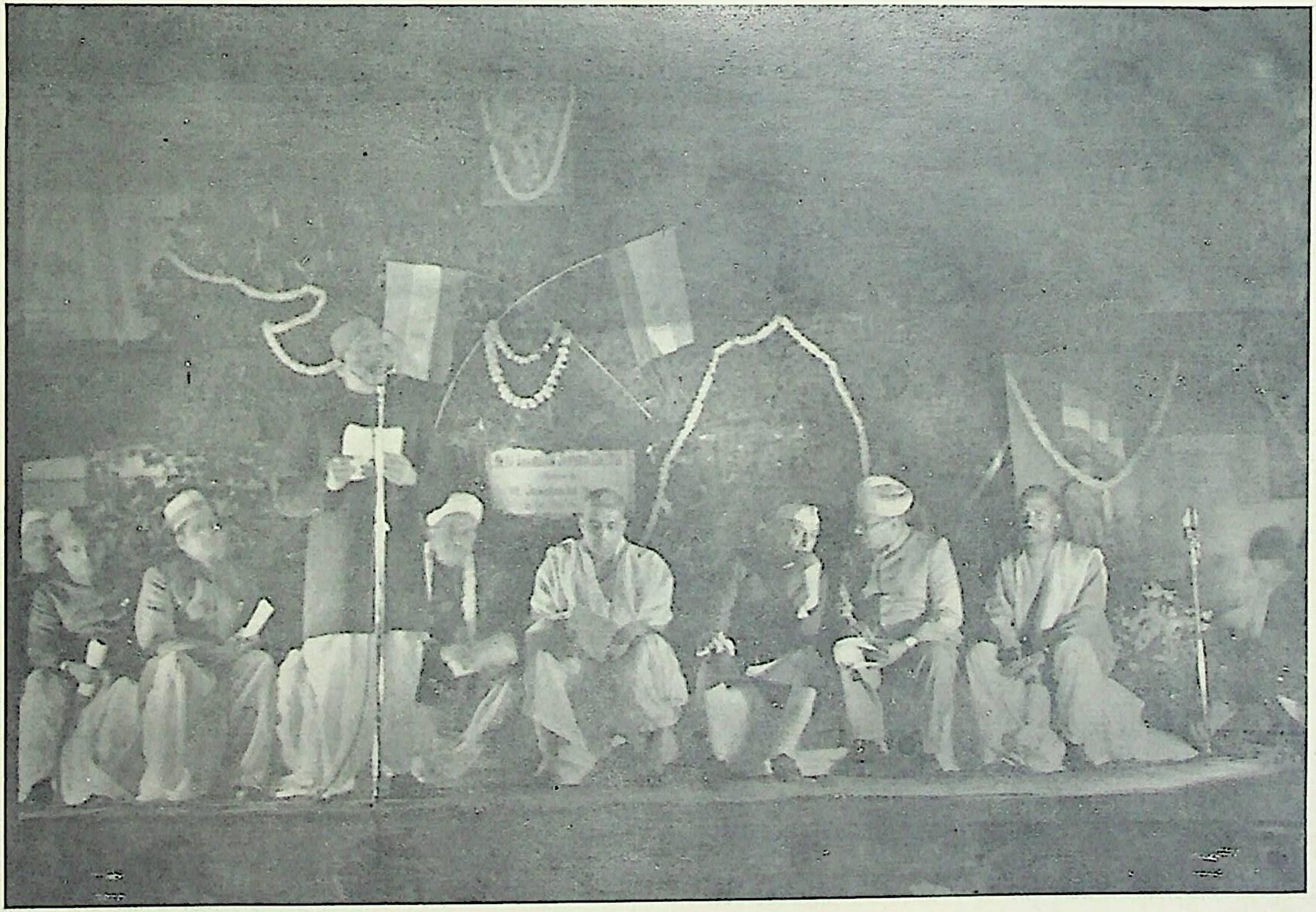

आधुनिक भारत के महान निर्माता स्वर्गीय पं० जवाहरलाल नेहरू के कर-कमलों द्वारा कालेज का शुभ-उद्घाटन (दिसम्बर, सन् १९४५)

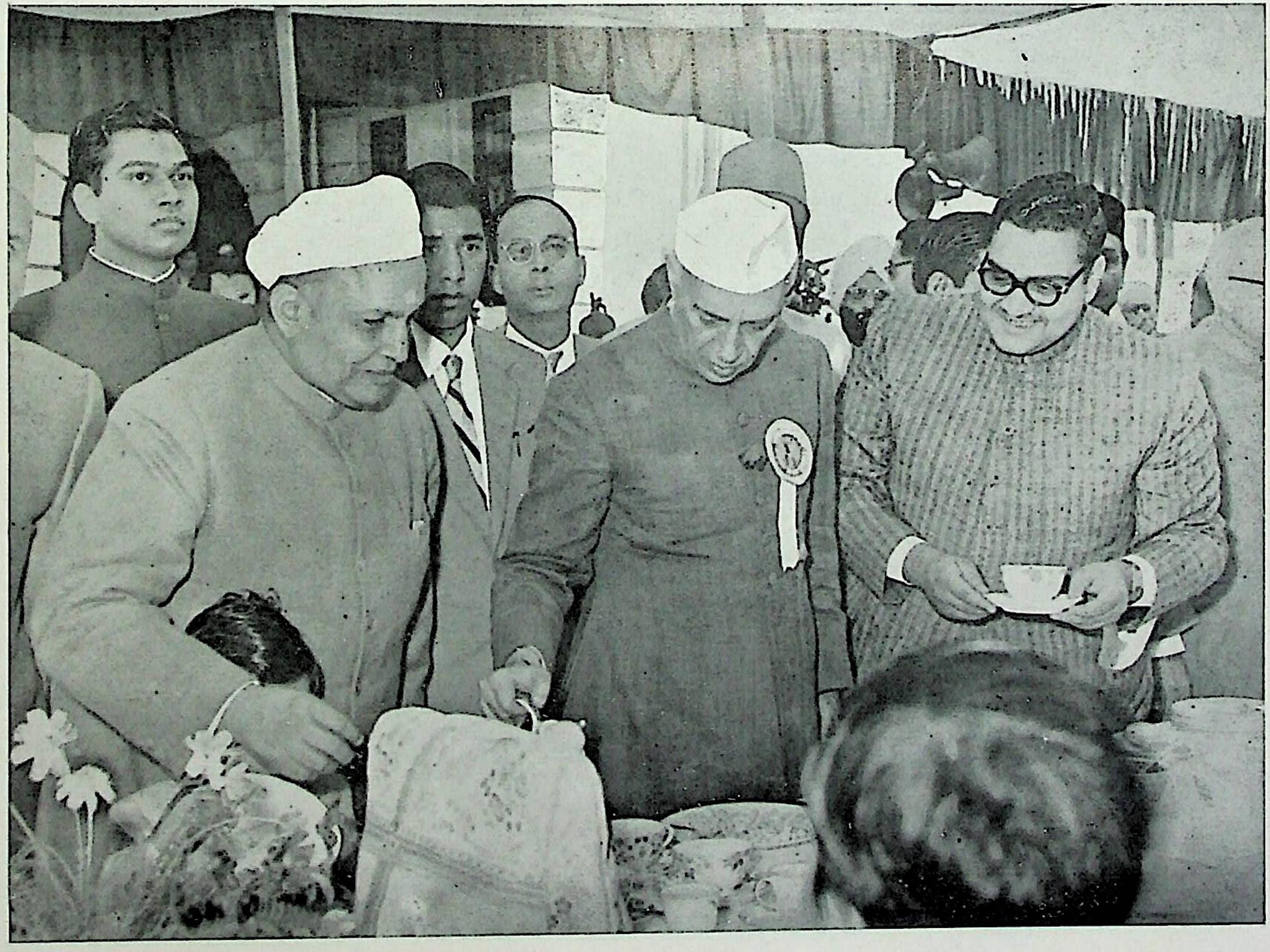

स्वदेशी हाउस में पंडित नेहरू (सन् १९५७)

सेठ आनन्दराम जैपुरिया कालेज

कलकत्ता

कालेज का विशाल भवन

सेठ आनन्दराम जैपुरिया कालेज
कलकत्ता

सेठ आनन्दराम जैपुरिया कालेज शिक्षा-जगत में जैपुरिया बान्धवों की अमर देन है। इसकी शुभ-स्थापना जैपुरिया परिवार द्वारा जुलाई सन् १९४५ में हुई थी।

आधुनिक भारत के महान निर्माता स्वर्गीय पं० जवाहरलाल जी नेहरू के कर-कमलों द्वारा २२ दिसम्बर सन् १९४५को इस कालेज का शुभ-उद्घाटन सम्पन्न हुआ था।

कालेज का ध्येय विद्यार्थियों को अच्छी व क्रम-बद्ध, कला, विज्ञान व वाणिज्य की शिक्षा देना है, जो कि स्वस्थ वातावरण, अच्छी ग्राह्यता तथा अध्यापकों व विद्यार्थियों के व्यक्तिगत सहयोग एवं सहानुभूति पर आधारित हो। हमें यह कहते हुए प्रसन्नता है कि अपने उद्देश्यों को चरितार्थ बनाने में इस कालेज को आशातीत सफलता प्राप्त हुई है और आज पश्चिम बंगाल के प्रमुख प्रतिष्ठित कालेजों में सेठ आनन्दराम जैपुरिया कालेज की गणना होती है।

प्रारम्भ में, इस कालेज में कलकत्ता विश्वविद्यालय से सम्बद्ध इण्टरमीडिएट कला, बी. ए. (पास तथा आनर्स) तथा बी० काम० की शिक्षा प्रदान की जाती थी। सन् १९५२ से इसमें विज्ञान की कक्षाओं का शुभारम्भ किया गया जिसमें इण्टरमीडिएट कक्षाओं में गणित, भौतिक-विज्ञान, रसायन-शास्त्र और जीव-विज्ञान के विषयों में प्रशिक्षण दिया जाने लगा। कालेज की स्थापना को अधिक स्थायित्व प्रदान करने के उद्देश्य से मई सन् १९५५ में सोसाइटीज़ रजिस्ट्रेशन एक्ट सन् १८६१ के अन्तर्गत इस कालेज को पंजीकृत कराया गया और सेठ आनन्दराम जैपुरिया ट्रस्ट के ट्रस्टियों ने जो इस कालेज की भूमि और भवन के सर्वेसर्वा हैं, कालेज को मात्र केवल सौ रुपये वार्षिक की 'लीज' पर कालेज की प्रबन्धकारिणी-समिति को सौंप दिया।

कलकत्ता विश्वविद्यालय में तीन वर्ष के डिग्री कोर्स होने पर इस कालेज में भी नयी योजनायें संचालित की गयीं। सन् १९६१ में कालेज का नया चौमंजिला भवन करीब २४००० वर्ग-फीट आयतन पर निर्मित कराया गया। इसी वर्ष आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित

वृहदायतन विज्ञान की प्रयोगशालाएं, शिक्षण-गैलरी, अध्यापन-कक्षाओं के निर्माण के साथ यहाँ बी० एस० सी० की कक्षाएं भी खोल दी गयीं जिनमें गणित, भौतिक-विज्ञान तथा रसायन-शास्त्र में विज्ञान की उच्च-शिक्षा प्रदान की जाती है। सन् १९६५ में कालेज के भवन के पुनः विस्तार के लिये २२००० वर्गफीट आयतन पर चौमंजिला भवन निर्माण कराने का कार्य प्रारम्भ किया गया जो अब तैयार हो गया है। इसी वर्ष भौतिक-विज्ञान तथा वाणिज्य (एकाउन्टेन्सी) में आनर्स-कोर्स की कक्षाएं संचालित की गयीं। रसायन-शास्त्र में आनर्स की कक्षाओं का शुभारम्भ सन् १९६६ से हो चुका है। साथ ही साथ सन् १९६६ ही से महिला-छात्राओं के लिये प्रातः कालीन कक्षाओं में अलग विभाग भी खोले जा चुके हैं।

नये भवन का निर्माण कलकत्ता-विश्वविद्यालय में आनर्स-कोर्स के अन्तर्गत रक्खे गये विज्ञान के उपयुक्त विषयों में उच्च शिक्षा के हेतु भौतिक तथा रसायन-शास्त्र की अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं की पूर्ति करेगा जिसमें एक उच्चस्तर के विशाल पुस्तकागार की भी व्यवस्था है। यह पुस्तकागार छात्रों के उपयोग के लिए प्रातःकाल ६-३० बजे से लेकर रात्रि ९ बजे तक उपलब्ध रहेगा। सबसे प्रथम खण्ड में जीव-विज्ञान तथा विद्यालय के प्रबन्ध कार्यालय रहेंगे। इस विस्तार योजना के अन्तर्गत भविष्य में असेम्बली-हाल, म्यूजियम, मनोरंजन-कक्ष, कैन्टीन तथा औषधालय की व्यवस्था भी रहेगी।

सेठ आनन्दराम जैपुरिया कालेज तीन पालियों में विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करता है। प्रथम 'दिवस-विभाग', कला एवं विज्ञान (पास तथा आनर्स) के विषयों के लिये, दूसरा 'सायंकालीन-विभाग', वाणिज्य तथा वाणिज्य-प्रबन्ध विषयों (पास तथा आनर्स) के लिए तथा तीसरा प्रातःकालीन विभाग जिसमें केवल छात्राओं को ही शिक्षा दी जाती है। इस समय इस कालेज में कुल २८०० छात्र एवं ३२५ छात्रायें शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। कालेज में इस समय उच्च-शिक्षा एवं उपाधि-प्राप्त लगभग ८५ शिक्षक हैं जिनकी योग्यता तथा अनुभव के फलस्वरुप विश्वविद्यालय की विभिन्न परीक्षाओं में इस कालेज का परीक्षा-फल सदा समान रूप से अति उत्तम रहता है।

सेठ आनन्दराम जैपुरिया कालेज पश्चिम बंगाल प्रान्त में शिक्षा के एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति कर रहा है। प्रतिभाशाली, निर्धन और योग्य छात्र-छात्राओं को यहाँ छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाती है। यह कालेज उत्तरोत्तर प्रगति और विकास के पथ पर अग्रसर है।

राष्ट्र को प्रतिभावान, समर्थ और सुयोग्य नागरिक प्रदान करने के हेतु शिक्षा-जगत में इस कालेज की सेवायें स्तुत्य हैं।

★

सेठ आनन्दराम जैपुरिया इन्टर कालेज
आनन्दनगर (गोरखपुर)

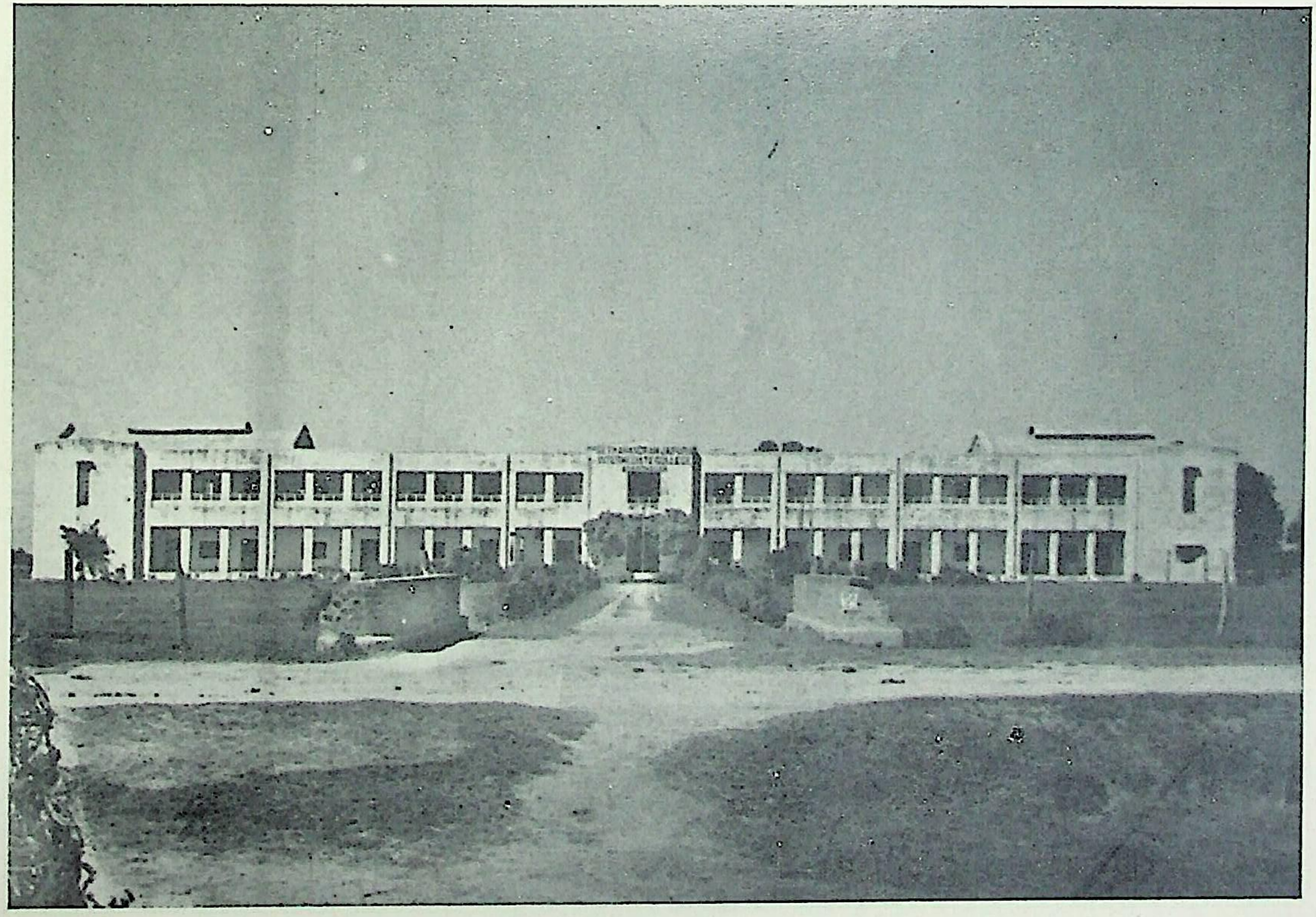

विद्यालय का मुख्य-भवन

सेठ आनन्दराम जैपुरिया इन्टर कालेज

आनन्दनगर (गोरखपुर)

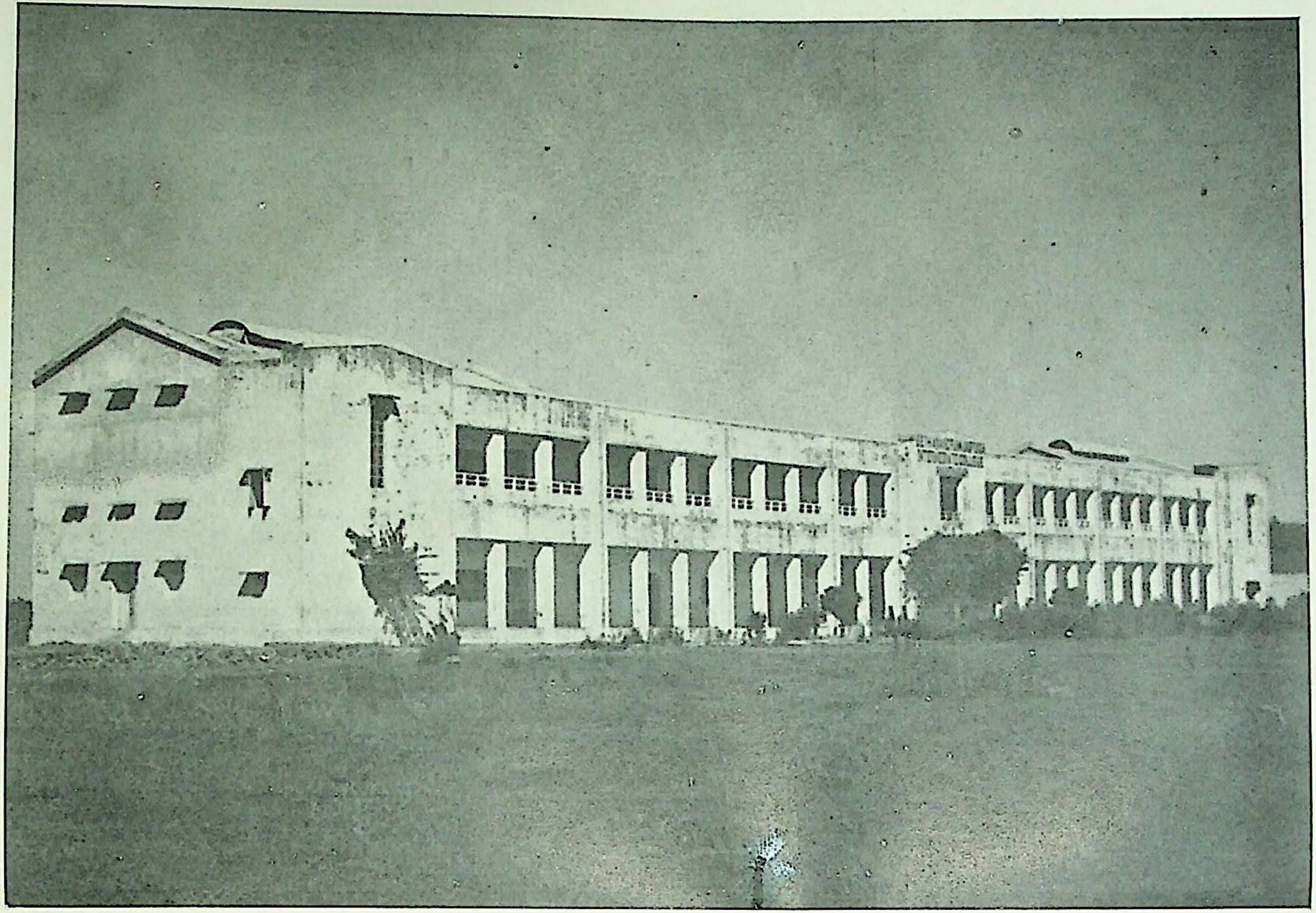

विद्यालय भवन का एक दृश्य

सेठ आनन्दराम जैपुरिया इण्टर कालेज
आनन्दनगर (गोरखपुर)

पूर्वी उत्तर प्रदेश में गोरखपुर जिले के अन्तर्गत 'फरेन्दा' नामक एक कस्बा है जो स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जी जैपुरिया की पुनीत स्मृति में अब 'आनन्दनगर' के नाम से प्रचलित हो गया है। प्रारम्भ में जैपुरिया-बान्धवों ने सन् १९३१ में यहीं पर उत्तर प्रदेश में अपने प्रथम व्यावसायिक प्रतिष्ठान गणेश शुगर मिल्स लिमिटेड की स्थापना की थी। उस काल में इस अविकसित भू-भाग में जहां सौ मील के अन्तर्गत कोई सुव्यवस्थित शिक्षण-संस्था नहीं थी, जैपुरिया बान्धवों का ध्यान इस घोर अभाव की ओर गया। इसी उद्देश्य से उन्होंने सन् १९४१ में स्थानीय सहकारी गन्ना विक्रय समिति से हिन्दुस्तानी मिडिल स्कूल का प्रबन्ध अपने हाथों में लिया और उसका नामकरण 'सेठ पूर्णमल जैपुरिया हिन्दुस्तानी मिडिल स्कूल' कर दिया। इस संस्था की प्रगति से प्रोत्साहित होकर जैपुरिया-बान्धवों ने स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जी जैपुरिया की पुण्य-स्मृति में 'आनन्दनगर एजुकेशनल एसोसिएशन' की स्थापना की जिसके तत्वावधान में जुलाई सन् १९४४ में वर्तमान संस्था 'सेठ आनन्दराम जैपुरिया इण्टर कालेज' का बीजारोपण एक अंग्रेजी मिडिल स्कूल के रूप में हुआ। आज यह संस्था क्षेत्र की सर्वाधिक अग्रगण्य शिक्षण-संस्था के रूप में प्रख्यात है।

प्रारम्भ में विद्यालय का कार्य गन्ना विकास समिति के भवन में होता रहा। सन् १९४६ में इस संस्था को हाई-स्कूल की मान्यता प्राप्त हुई। १५ अगस्त सन् १९४७ की शुभ-बेला में संस्था के नव-निर्मित सुविशाल भवन में पठन-पाठन का कार्य प्रारम्भ हुआ। यह विद्यालय सोलह एकड़ भूमि के एक विस्तृत प्रांगण पर स्थित है। इसके उत्तरी छोर पर एक विशाल भवन है। यह प्रसन्नता का विषय है कि सन् १९५१ में वाणिज्य, सन् १९५४ में साहित्यिक तथा सन् १९६२ में वैज्ञानिक विषयों में इस संस्था को इन्टरमीडिएट कालेज की मान्यता प्राप्त हुई।

सेठ आनन्दराम जैपुरिया इन्टर कालेज में साहित्य, विज्ञान और वाणिज्य विषयों में पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था है। सन् १९४४–४५ में जहाँ इस विद्यालय में केवल १२ अध्यापक और १०० छात्र थे, वहीं आज इस विद्यालय में लगभग ५० अध्यापक हैं और १६००

छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए यहाँ खेल कूद और सामूहिक व्यायाम की सुन्दर व्यवस्था है। जुलाई सन् १९६१ में यहाँ एन० सी० सी० की एक टुकड़ी तथा जुलाई सन् १९६५ में दूसरी टुकड़ी की स्थापना हुई। एन० सी० सी० की प्रतियोगिता में इस विद्यालय के छात्र अग्रणी रहते हैं।

सन् १९५१ में यहाँ एक सुरम्य और भव्य छात्रावास का निर्माण हुआ। छात्रावास में लगभग १०० विद्यार्थियों के निवास और भोजन का समुचित प्रबन्ध है।

प्रबन्धकों के लिए यह संतोष का विषय है कि इस विद्यालय के बहुतेरे छात्र अपनी प्रखर प्रतिभा, कर्तव्यपारायणता एवं अध्ययन में दत्त-चित्तता के फलस्वरूप जन-सेवा के उच्च-पदों पर आसीन हैं। इतना ही नहीं, कतिपय छात्र विज्ञान एवं इंजीनियरिंग की उच्च शिक्षा विदेशों में प्राप्त कर रहे हैं। सेठ आनन्दराम जी जैपुरिया की पुनीत स्मृति में संस्थापित यह विद्यालय पूर्वी उत्तर प्रदेश के पिछड़े और अविकसित क्षेत्र में ज्ञान-विज्ञान की ज्योति जगाता हुआ निरन्तर अभ्युत्थान की ओर अग्रसर है।

★

सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत्।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः॥

—श्रीमद्भगवद्गीता

[हे कौन्तेय ! मनुष्य को अपने सहज स्वभाव के अनुसार जो कार्य हो, उसे छोड़ना नहीं चाहिये, चाहे उसमें दोष भी क्यों न हों क्योंकि जैसे आग धुयें से ढकी रहती है, वैसे सब कर्म किसी न किसी दोष से ढके रहते हैं।]

★

सेठ पूर्णमल जैपुरिया जूनियर हाई स्कूल

आनन्दनगर (गोरखपुर)

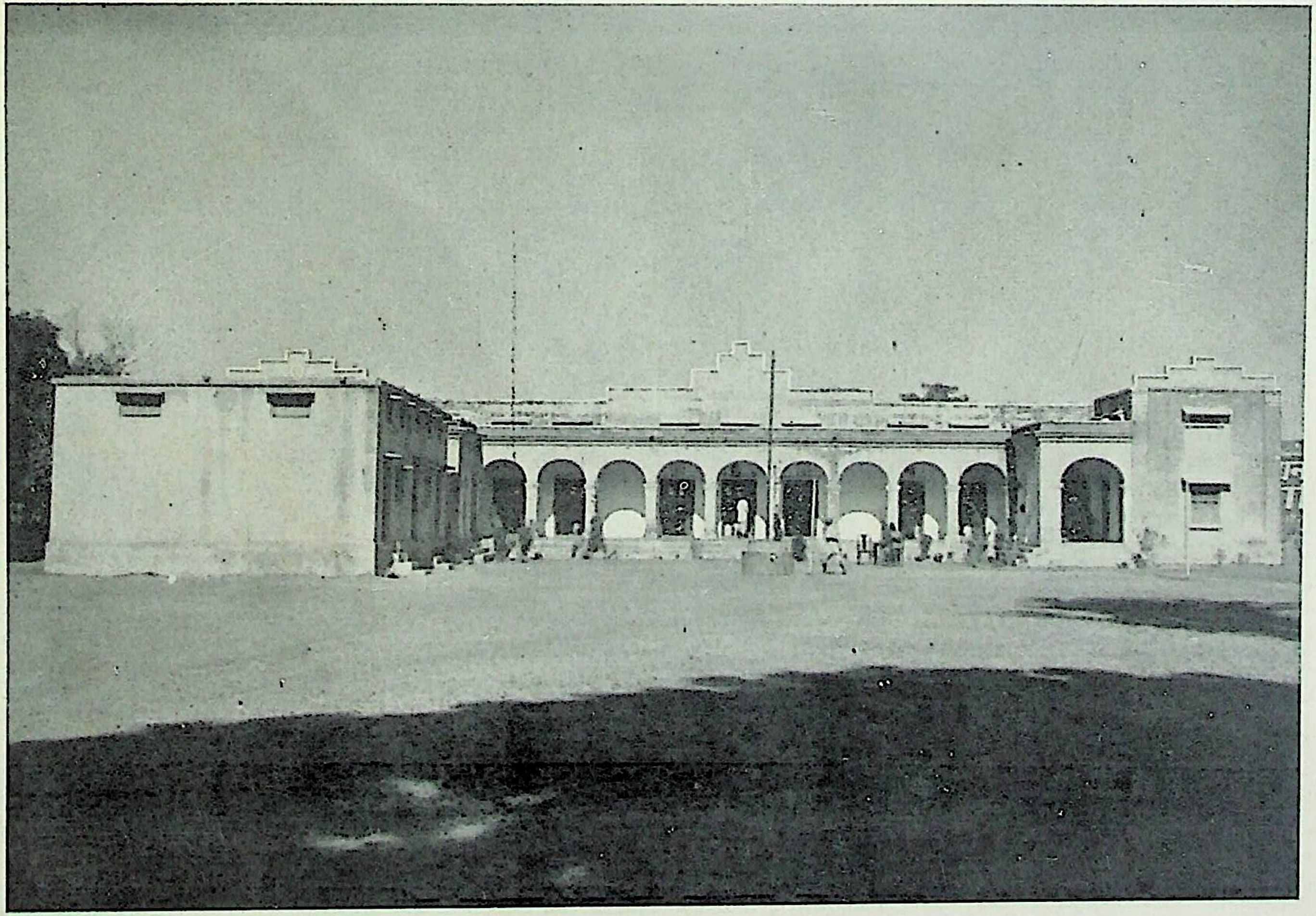

विद्यालय - भवन का एक दृश्य

सेठ पूर्णमल जैपुरिया जूनियर हाई - स्कूल

आनन्दनगर, (गोरखपुर)

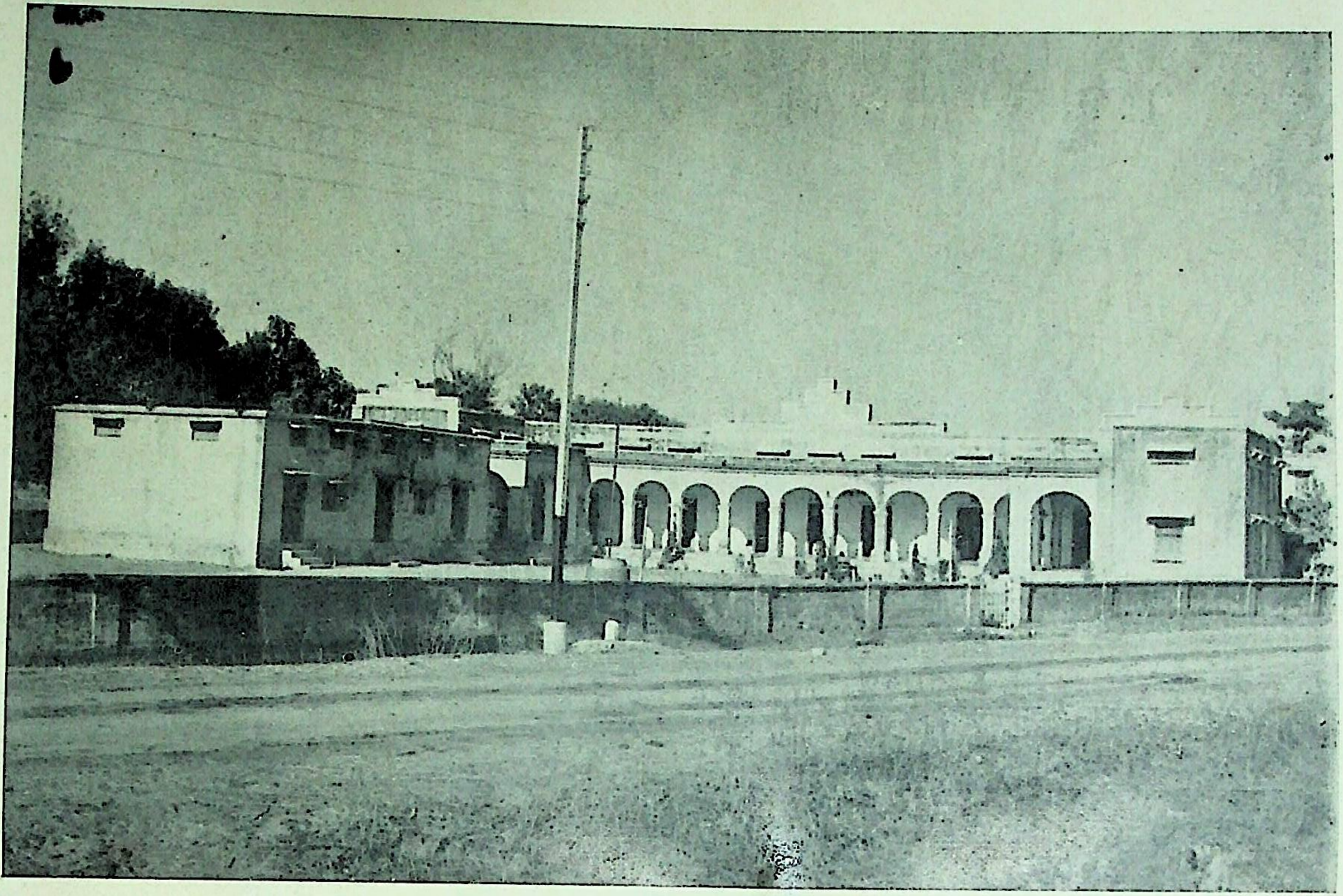

विद्यालय - भवन

सेठ पूर्णमल जैपुरिया जूनियर हाई स्कूल

आनन्दनगर (गोरखपुर)

सहकारी गन्ना विक्रय समिति, आनन्दनगर द्वारा सन् १९३८ में आनन्दनगर में एक हिन्दुस्तानी मिडिल स्कूल संचालित हुआ था। इस समिति द्वारा स्कूल-संचालन में विशेष प्रगति न देख कर शिक्षा-प्रचार हेतु जैपुरिया बान्धवों ने सन् १९४१ में इस स्कूल का प्रबन्ध अपने हाथों में ले लिया और इस विद्यालय का नामकरण 'सेठ पूर्णमल जैपुरिया हिन्दुस्तानी मिडिल स्कूल' के रूप में किया।

सन् १९४४ में शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार से इस स्कूल को मान्यता प्राप्त हुई और इसका नामकरण 'सेठ पूर्णमल जैपुरिया जूनियर हाईस्कूल, आनन्दनगर' कर दिया गया। इस जूनियर हाईस्कूल के लिए एक सुन्दर भवन का निर्माण हुआ। सन् १९६१ में इसमें विज्ञान का एक कक्ष तथा सन् १९६४ में विज्ञान के कक्ष से संलग्न एक और कक्ष का निर्माण प्रबन्धकों ने करवाया।

इस समय इस जूनियर हाई स्कूल में कक्षा ६, ७ व ८ के विभिन्न वर्गों में लगभग २५० छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं जिन्हें शिक्षा देने के हेतु आठ सुयोग्य अध्यापक नियुक्त हैं। जूनियर कक्षाओं के लिए यह विद्यालय इस क्षेत्र में अत्यन्त लोक-प्रिय सिद्ध हुआ है।

★

गणेश प्राइमरी पाठशाला

आनन्दनगर (गोरखपुर)

जैपुरिया - बान्धवों द्वारा गणेश शुगर मिल्स लिमिटेड, आनन्दनगर की स्थापना के पश्चात् मिल-प्रांगण में कर्मचारियों के बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा के हेतु गणेश प्राइमरी पाठशाला का शुभारम्भ हुआ। इस प्राइमरी पाठशाला के लिए सन् १९६६ में मिल प्रबन्धकों द्वारा एक पक्के भवन का निर्माण करवाया गया और जुलाई सन् १९६६ से यह पाठशाला अपने नव-निर्मित भवन में स्थानान्तरित कर दी गयी।

गणेश प्राइमरी पाठशाला में बच्चों को कक्षा १ से कक्षा ५ तक की प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती है जिसमें बालक-बालिकाओं को मिला कर लगभग १२५ विद्यार्थी यहाँ शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस समय शिक्षा देने के हेतु यहाँ दो अध्यापक तथा एक अध्यापिका नियुक्त हैं। इस प्राइमरी पाठशाला के सफल संचालन से क्षेत्रीय निवासियों एवं मिल कर्मचारियों के बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने में बड़ी सुविधा हो गयी है। पाठशाला का प्रबन्ध एवं शिक्षा देने का तरीका, दोनों ही अत्यन्त सहज एवं सुगम है।

★

गणेश प्राइमरी पाठशाला

आनन्दनगर (गोरखपुर)

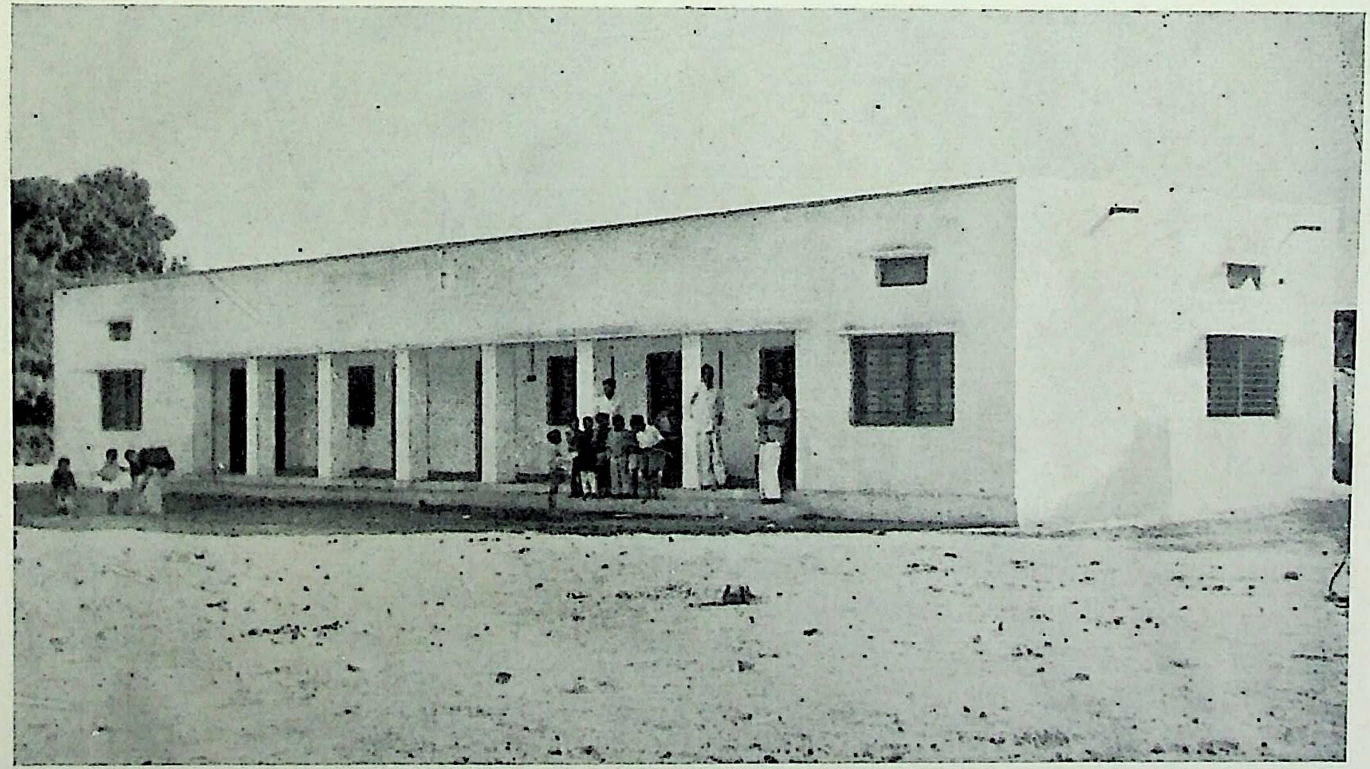

पाठशाला - भवन

सेठ गजाधर जैपुरिया विद्यामन्दिर उच्च माध्यमिक विद्यालय,
नवलगढ़ (जैपुर)

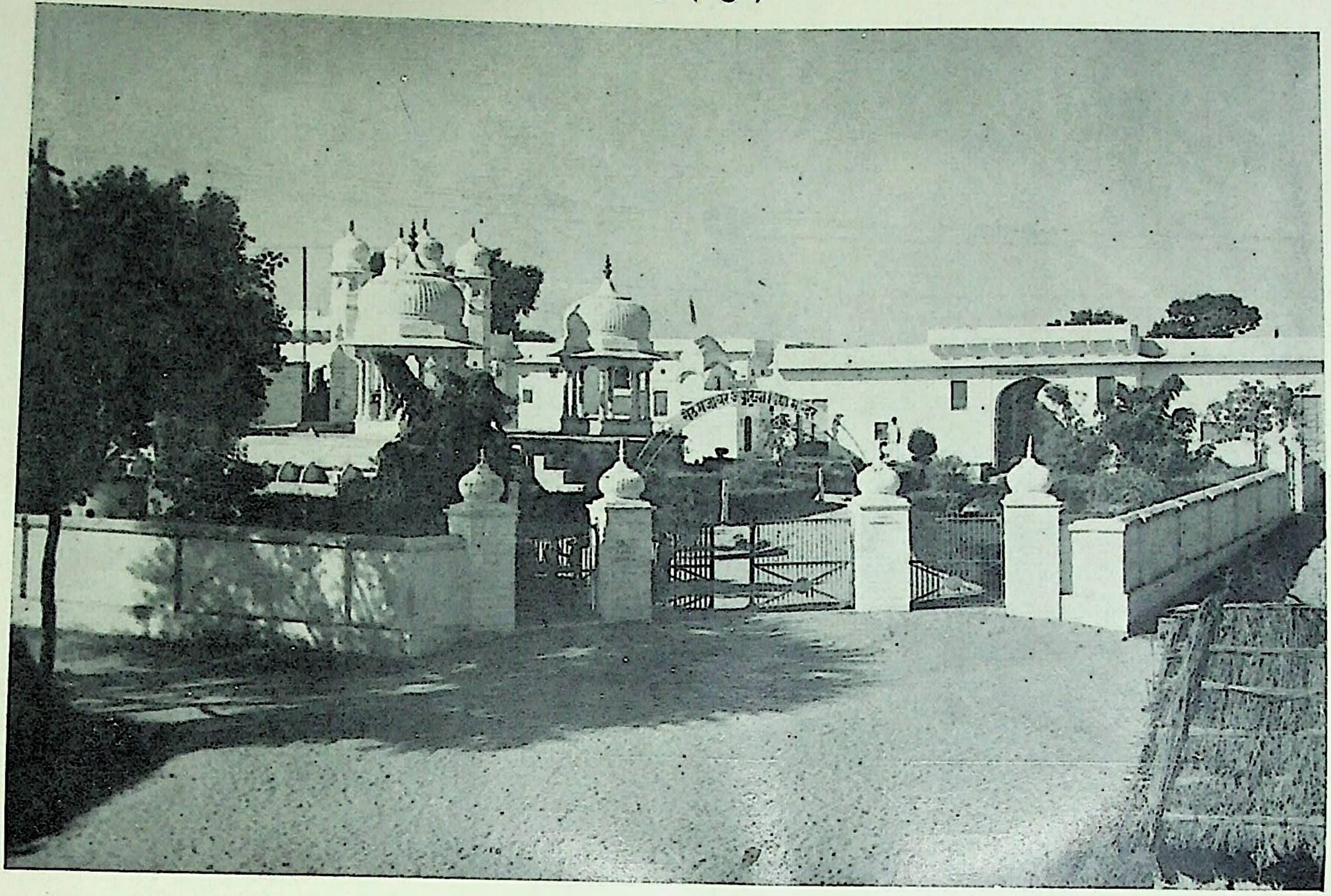

विद्यामन्दिर का प्रवेश-द्वार

सेठ गजाधर जैपुरिया विद्यामन्दिर उच्च माध्यमिक विद्यालय, नवलगढ़ (राजस्थान)

राजस्थान के सुप्रसिद्ध नगर नवलगढ़ में स्थापित सेठ गजाधर जैपुरिया विद्या-मन्दिर उच्च-माध्यमिक विद्यालय जैपुरिया परिवार की लोक-कल्याणमयी भावना का शुभ-प्रतीक है। इस विद्यामन्दिर की स्थापना जैपुरिया परिवार के सदस्य स्वर्गीय सेठ गजाधर जी जैपुरिया के कर-कमलों द्वारा २३ नवम्बर १९५६ को हुई थी तथा इसका उद्घाटन सेठ बालाबख्श जी बिड़ला के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ था। पिछले बारह वर्षों से यह संस्था निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर होकर शेखावाटी के निवासियों के लिये शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़े अभाव की पूर्ति कर रही है।

प्रारम्भ में इस विद्यामन्दिर में केवल छठवीं कक्षा तक के शिक्षण की व्यवस्था थी किन्तु जुलाई सन् १९५७ में यहां सातवीं तथा आठवीं कक्षाओं के शिक्षण की व्यवस्था हुई तथा इसे मिडिल स्कूल का स्तर दे दिया गया। जुलाई १९६३ से इसे हायर सेकेंड्री स्तर देकर इसके प्राइमरी विभाग को अलग कर दिया गया। सेकेंड्री विभाग में कला तथा वाणिज्य के शिक्षण की यहां व्यवस्था है। प्राइमरी, मिडिल तथा सेकेंड्री विभाग को मिला कर लगभग ६०० विद्यार्थी यहां शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं जिनमें छात्रायें भी सम्मिलित हैं।

विद्यामन्दिर को चलाने के लिये सेठ आनन्दराम जैपुरिया ट्रस्ट ने एक विशाल भवन दे रक्खा है जो नगर के खुले भाग में सुरम्य स्थान में स्थित है। जल तथा विद्युत की सभी सुविधाओं से सम्पन्न इस विद्यामन्दिर के प्रत्येक कक्ष में बिजली तथा पंखों की व्यवस्था है।

विद्यामन्दिर में छात्रों के बहुमुखी विकास का ध्यान रखते हुये शिक्षा प्रदान की जाती है। साथ ही, यहाँ एक पुस्तकालय भी है जिसमें लगभग २००० पुस्तकें हैं। पुस्तकालय के साथ एक वाचनालय भी है जहाँ ५० से अधिक दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र-पत्रिकायें उपलब्ध रहती हैं। निर्धन तथा कुशाग्र-बुद्धि छात्रों को यहां पुस्तकें तथा नकद रूप में सहायता देने का समुचित प्रबन्ध है। सन् १९६३-६४ से विद्यामन्दिर की वार्षिक-पत्रिका का

प्रकाशन भी होता है जिसमें छात्रोपयोगी रचनायें रहती हैं। प्रजातांत्रिक शासन-पद्धति का ज्ञान देने के लिये यहां छात्र-संसद् भी है जिसका अपना नियमित विधान है। विद्यालय का परीक्षा-फल सदैव संतोषजनक रहता है। सन् १९६७ के सत्र में सेकेंड्री स्कूल का परीक्षा फल ८६ प्रतिशत था।

झुंझनू जिले के विकासमान विद्यालयों में सेठ गजाधर जैपुरिया विद्यामन्दिर उच्च माध्यमिक विद्यालय का प्रमुख स्थान है। इस विद्यामन्दिर को राजकीय अनुदान भी प्राप्त है। इसमें सन्देह नहीं कि भविष्य में यह विद्यामन्दिर प्रगति के नये कीर्तिमान स्थापित करेगा।

★

यदृच्छालाभ संन्तुष्टो द्वन्दातीतो विमत्सरः।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥

—श्रीमद्भगवद्गीता

[जो व्यक्ति सहज प्राप्त वस्तु से संतुष्ट है, सुख-दुःख आदि द्वन्दों से परे पहुंच गया है, जो ईर्ष्या से रहित है, सफलता में सम-भाव से रहता है, वह कर्म करता हुआ भी कर्म-बन्धन में नहीं पड़ता।]

★

श्री जैपुरिया हायर सेकेन्ड्री स्कूल
पाण्डवेश्वर (बर्दवान)

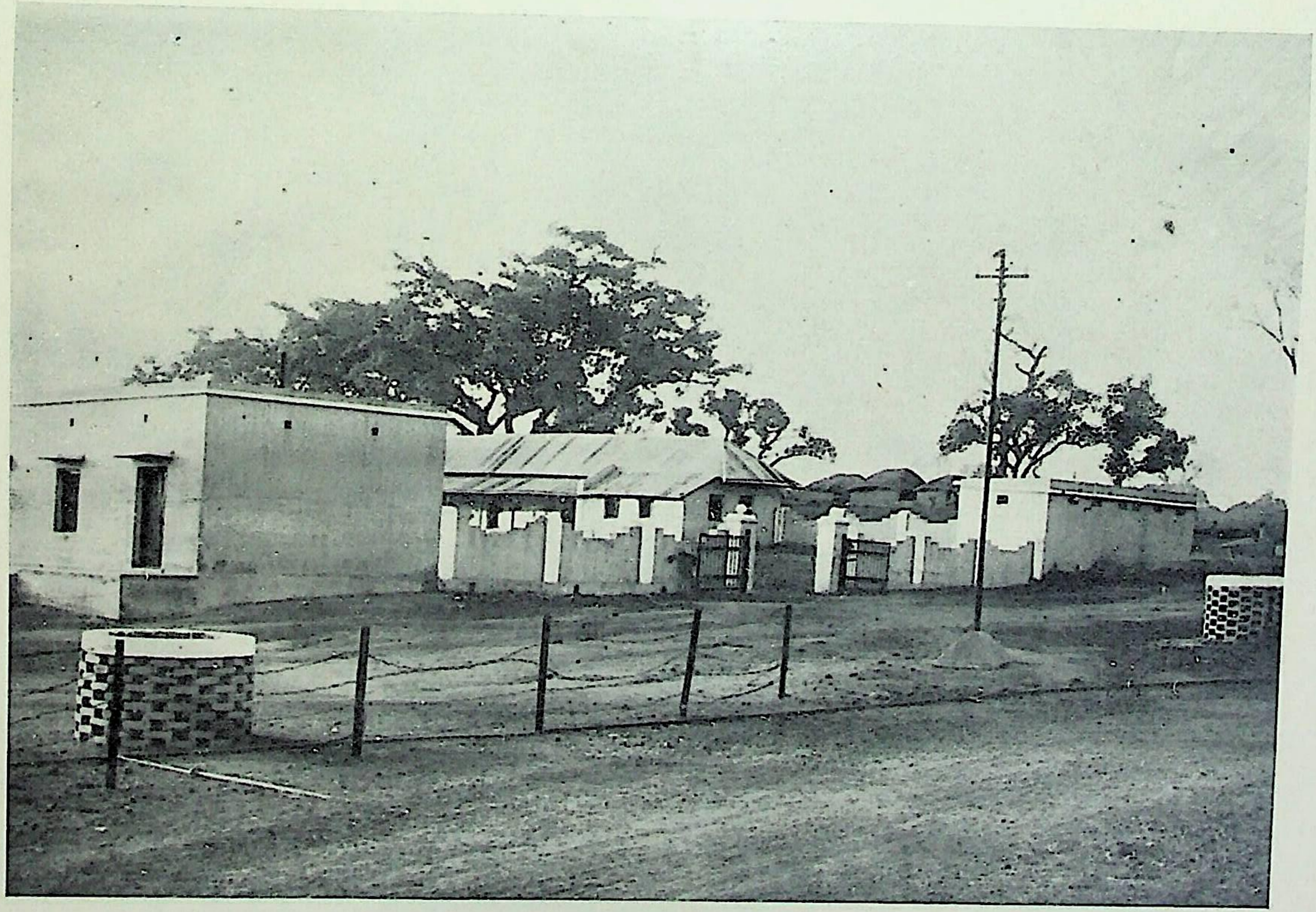

विद्यालय - भवन

श्री जैपुरिया हायर सेकेन्ड्री स्कूल
पाण्डवेश्वर (बर्दवान)

★

पश्चिम बंगाल में बर्दवान जिले के अन्तर्गत पाण्डवेश्वर में स्थित श्री जैपुरिया हायर सेकेन्ड्री स्कूल क्षेत्रीय निवासियों के बहुत बड़े अभाव की पूर्त्ति कर रहा है। इस विद्यालय का उद्घाटन सन् १९५१ में हुआ था। सन् १९५७ में इस विद्यालय को हाई-स्कूल की मान्यता प्राप्त हुई और सन् १९६३ में इसे हायर सेकेन्ड्री स्तर प्रदान किया गया। सन् १९६५ से इस विद्यालय को विज्ञान में भी प्रशिक्षण देने की अनुमति प्राप्त हो गयी है। इस विद्यालय में सह-शिक्षा है जहाँ छात्र एवं छात्रायें धर्म, जाति के भेदभाव से परे सामान्य रूप से शिक्षा ग्रहण करते हैं।

विद्यालय की प्रगति का अनुमान इसी तथ्य से स्पष्ट है कि जहाँ प्रारम्भ में इस विद्यालय में केवल २४ विद्यार्थी थे, वहीं आज लगभग ५०० छात्र-छात्रायें शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। सन्तोष का विषय है कि अन्य शिक्षण-संस्थाओं की भाँति यह संस्था भी निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर है।

♣

श्री आनन्द शुगर मिल्स प्राइमरी पाठशाला
खलीलाबाद (बस्ती)

जैपुरिया बान्धवों ने गोरखपुर जिले के आनन्दनगर में गणेश शुगर मिल्स लिमिटेड की स्थापना के पश्चात् खलीलाबाद में शक्कर की मिल श्री आनन्द शुगर मिल्स लिमिटेड की स्थापना की जहां के कर्मचारियों की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए उन्होंने श्री आनन्द शुगर मिल्स प्राइमरी पाठशाला की स्थापना की थी।

पाठशाला में इस समय ५ कक्षायें चलती हैं जिनमें ७२ बच्चे शिक्षा प्राप्त करते हैं। शिक्षण के हेतु यहां दो सुयोग्य अध्यापक नियुक्त हैं। यह पाठशाला क्षेत्रीय जनता की उल्लेखनीय सेवा कर रही है।

आशा है भविष्य में यह पाठशाला अन्य संस्थाओं की भांति सुचारु रूप से विकसित होकर उल्लेखनीय प्रगति करेगी।

★

श्रीमती नानी बाई जैपुरिया बालिका विद्यालय
मंडावा (जैपुर)

राजस्थान-प्रदेश के मंडावा क्षेत्र में श्रीमती नानीबाई जैपुरिया बालिका - विद्यालय बालिकाओं का विद्यालय है जहां कक्षा ८ तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। इस बालिका विद्यालय में सुयोग्य अध्यापिकाओं की देख रेख में लगभग २५० बालिकाओं को शिक्षा दी जा रही है। बालिका विद्यालय का व्यय जैपुरिया ट्रस्टों द्वारा वहन किया जाता है।

★

सेठ आनन्दराम जैपुरिया नेत्र चिकित्सालय
नवलगढ़, राजस्थान

जैपुरिया - बान्धवों द्वारा संचालित लोकसेवी संस्थाओं की महान शृंखला में सेठ आनन्दराम जैपुरिया नेत्र - चिकित्सालय एक महत्वपूर्ण कड़ी है। ऐतिहासिक राजस्थान के गौरवपूर्ण इतिहास में जैपुरिया बान्धवों का यह विशाल आयोजन जन-मंगल और लोक-कल्याण का एक ज्वलन्त प्रतीक है।

राजस्थान के सुप्रसिद्ध नगर नवलगढ़ में इस चिकित्सालय का कार्यारम्भ २८ जनवरी सन् १९४२ को किराये के एक मकान में हुआ था। चिकित्सालय के भवन का शिलान्यास जयपुर के तत्कालीन प्रधान-मन्त्री सर मिर्जा इस्माइल के० सी० आई० ओ० बी० ई० द्वारा १० अगस्त सन् १९४२ को सम्पन्न हुआ था। चिकित्सालय के भवन-निर्माण का कार्य सन् १९४८ में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। चिकित्सालय के मुख्य द्वार के सन्मुख आशुतोष भगवान श्री आनन्देश्वर महादेव का भव्य मन्दिर स्थित है। जैपुरिया-बान्धवों द्वारा १६ फरवरी सन् १९५३ की मंगल-बेला में संगमर्मर के इस कला-पूर्ण मन्दिर का निर्माण हुआ।

आधुनिक चिकित्सा के उपकरणों से परिपूर्ण लगभग दो सौ शैयाओं से संस्थापित इस चिकित्सालय की यह विशेषता है कि इसकी स्थापना के समय से आज तक यहाँ आँखों के जितने भी आपरेशन हुये हैं, वे शत-प्रतिशत सफल सिद्ध हुए हैं।

चिकित्सालय के निर्माण में भवन-निर्माण की नवीनतम कला का उपयोग किया गया है। बिजली के प्रकाश और पंखों, फ्लश के शौचालयों और आधुनिक स्नानागारों की सर्वत्र व्यवस्था है। इसी प्रकार साज–सज्जा, यंत्रों और उपकरणों की दिशा में आधुनिकतम साधनों का उपयोग किया गया है।

रोग-परीक्षा के कमरे के अतिरिक्त बड़ा अंधेरा कमरा (डार्क-रूम) बनाया गया है जिसमें रोगियों की नेत्र-परीक्षा होती है। शल्य-चिकित्सा के कक्ष (आपरेशन-थियेटर) से सटा हुआ यन्त्र-शोधनालय कक्ष (सर्जिकल-रूम) है जहाँ यन्त्र-शोधन के आधुनिकतम साधन प्रयुक्त होते हैं। औषधि-भण्डार के निकट औषधालय है जहाँ से रोगियों को औषधियां मिलती

सेठ आनन्दराम जैपुरिया नेत्र - चिकित्सालय
नवलगढ़ (जैपुर)

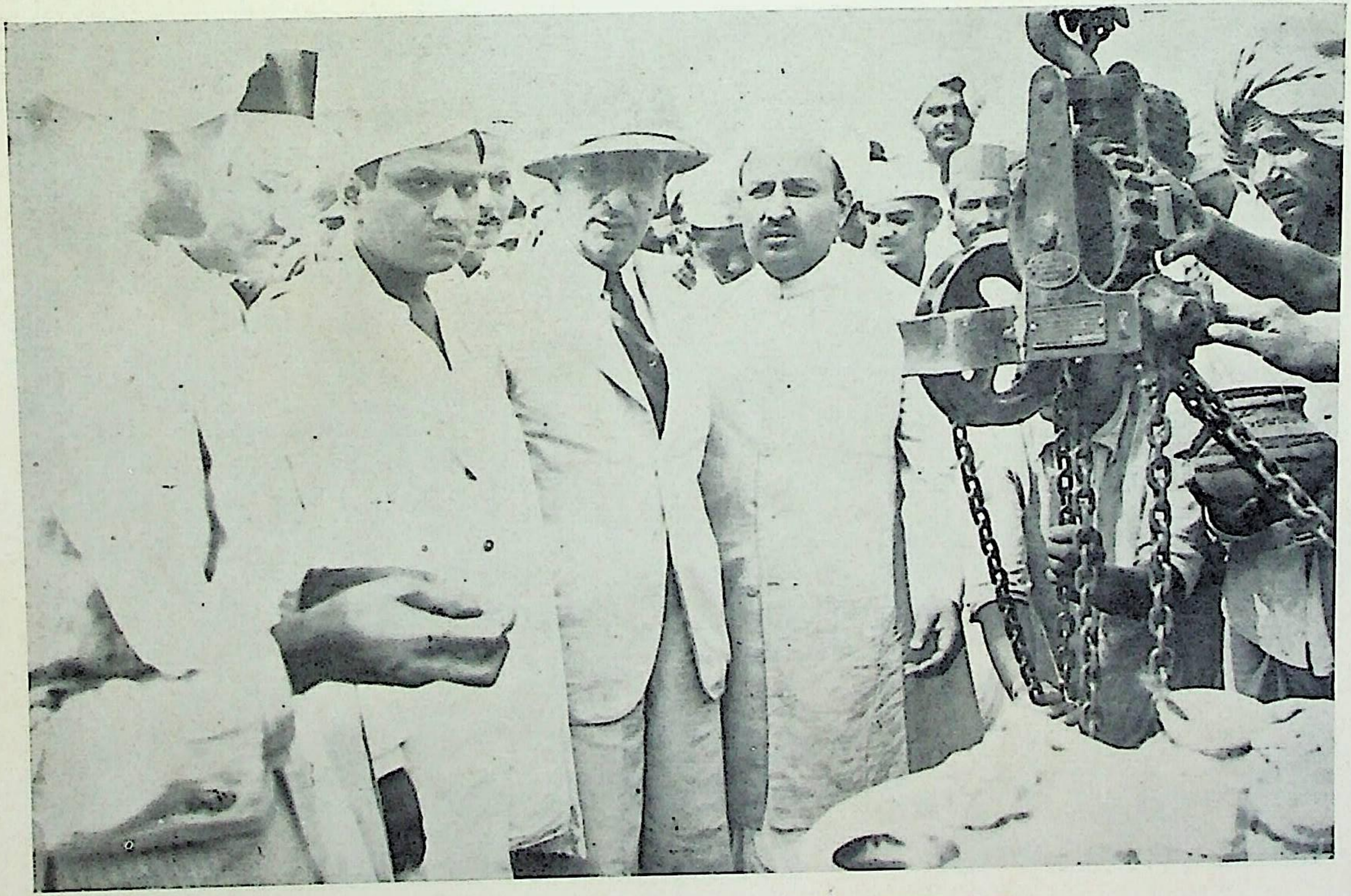

जैपुर के तत्कालीन प्रधान - मंत्री सर मिर्जा इस्माइल द्वारा
चिकित्सालय का शुभ - शिलान्यास

सेठ आनन्दराम जैपुरिया नेत्र - चिकित्सालय
नवलगढ़ (जैपुर)

चिकित्सालय का मुख्य - द्वार

सेठ आनन्दराम जैपुरिया नेत्र - चिकित्सालय
नवलगढ़ (जैपुर)

चिकित्सालय में राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल
डा० सम्पूर्णानन्द जी का शुभागमन

हैं। बाहरी रोगियों के औषधालय के सन्मुख 'क्ष-किरण' विभाग (एक्स-रे रूम) स्थित है जिसकी सन् १९५७ में स्थापना हुई थी। इसके अतिरिक्त पैथालाजिकल लेबोरेटरी भी महिलाओं के वार्ड के निकट स्थित है।

नेत्र-रोगों के अतिरिक्त इस चिकित्सालय में अन्य रोगों की भी चिकित्सा का यथोचित प्रबन्ध है। विशेष परिस्थितियों में चिकित्सालय की सेवायें रोगियों को अपने निवास-स्थान पर भी प्राप्त होती हैं विशेषकर प्रसूति में। शासकीय निर्देशन पर इस चिकित्सालय में शवच्छेदन का भी प्रबन्ध है।

चिकित्सालय के विभिन्न वार्डों में लगभग दो सौ से ऊपर रोगियों के रखने की व्यवस्था है। 'ए' श्रेणी का एक वार्ड क्वार्टरनुमा, 'बी' श्रेणी के छः वार्ड बंगलेनुमा एवं 'सी' श्रेणी के सत्ताइस वार्ड क्वार्टरनुमा बने हैं। इन प्राइवेट वार्डों के अतिरिक्त महिलाओं और पुरुषों के लिये 'जनरल-वार्डों' की भी व्यवस्था है। वार्डों के समीप कर्मचारियों के रहने के लिए 'फैमिली क्वार्टर्स' और बंगले भी बनाये गये हैं। निर्धन और असहाय रोगियों के लिये इस चिकित्सालय में दूध, पथ्य और वस्त्र देने का भी प्रबन्ध है। चिकित्सा में बिना किसी भेदभाव के सभी जाति एवं वर्गों के स्त्री-पुरुष रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा की जाती है जिससे न केवल राजस्थान के ही अपितु अन्य प्रान्तों के भी रोगी अधिकाधिक संख्या में लाभ उठाते हैं।

पूज्यपाद स्वर्गीय श्री दण्डीस्वामी दत्तपादाचार्याश्रम जी (राय बहादुर स्वर्गीय श्री दत्त जी) की इस संस्था पर विशेष कृपा रही है। राय बहादुर स्वर्गीय श्री दत्त जी, भिवानी ने अपने गृहस्थ जीवन में बहुमुखी सेवा-कार्य किया था तथा सन्यास ग्रहण करने के पश्चात भी जैपुरिया-बान्धवों के अनुनय-विनय पर वे आजीवन इस संस्था का दिशा-निर्देशन करते रहे। उनके आशीष और दिशा-निर्देशन के प्रति चिकित्सालय के प्रबन्धक कृतज्ञ हैं।

जैपुरिया परिवार के स्वर्गीय सेठ गजाधर जी जैपुरिया एवं स्वर्गीय सेठ पूर्णमल जी जैपुरिया इस चिकित्सालय की उन्नति के कार्यों में आजीवन अत्यन्त रुचि के साथ सहयोग देते रहे। सेठ भीखराज जी जैपुरिया बराबर इस चिकित्सालय में आते रहे किन्तु इधर कई वर्षों से उनका स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण वे नहीं पधार सकें हैं।

जिस महान पुण्यात्मा की पवित्र-स्मृति में इस चिकित्सालय की स्थापना हुई है, उसका यश अन्धकारमय संसार के प्राणियों के चक्षुओं में दिव्य-ज्योति बन कर प्रस्फुटित होता रहेगा। जैपुरिया बान्धवों ने स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जी की पुनीत स्मृति में चिकित्सालय के रूप में अमर स्मारक बना कर जन-सामान्य का मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया है।

★

सेठ आनन्दराम जैपुरिया स्मृति-भवन
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

भारत के महान तीर्थस्थल, बाबा विश्वनाथ की नगरी वाराणसी में निर्मित 'सेठ आनन्दराम जैपुरिया स्मृति-भवन' देश के कोने–कोने से वाराणसी पधारने वाले पर्यटकों एवं यात्रियों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है।

धर्मनिष्ठ स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जी जैपुरिया की उत्कट इच्छा थी कि भारत के धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र काशी में कोई ऐसा सुखद, सुसज्जित, शान्त अतिथि-भवन निर्मित कराया जाये जहां बाहर से पधारने वाले यात्रियों को प्रवास एवं चिन्तन का पूरा–पूरा आनन्द प्राप्त हो सके। दैववशात्, उनके जीवन-काल में उनकी यह इच्छा पूर्ण न हो सकी। स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जी के काशीवास के पश्चात् जैपुरिया- परिवार ने इस दिशा में विशेष रुचि लेकर गोदोलिया पर उपयुक्त जमीन क्रय कर ली। कुल जमीन ५१०० वर्गफुट है। मकराना (राजस्थान) के स्वच्छ और मनोहारी संगमर्मर से निर्मित यह स्मृति-भवन न केवल वाराणसी ही में अपितु उत्तर प्रदेश में अपने ढंग का अनूठा है।

स्मृति-भवन का शिलान्यास उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्य-मंत्री श्री चन्द्रभानु गुप्त के कर-कमलों द्वारा शुक्रवार दिनांक २८ अप्रैल १९६१ को हुआ था। स्मृति-भवन में कुल ३० स्वच्छ एवं हवादार कमरे हैं तथा प्रत्येक कमरे में विद्युत तथा पंखों की व्यवस्था है। स्मृति-भवन में एक पवित्र भोजनालय की व्यवस्था है जहां यात्रियों को शुद्ध एवं सात्विक भोजन सुलभ होता है। यदि कोई यात्री स्वयं भोजन बनाना चाहे तो इसके लिये रसोई तथा बर्तनों की भवन द्वारा सुविधा उपलब्ध है। अतिथि-गृह के बीच एक विशाल सभा-मंडप भी है जहां काशी की परम्परा के अनुसार भगवद्-भजन, प्रवचन एवं कथा-कीर्तन आयोजित किये जाते हैं।

स्मृति-भवन में प्रत्येक खंड के साथ आधुनिक साज-सज्जा से सम्पन्न सुविधाजनक स्नानागार एवं शौचालय निर्मित किये गये हैं। भवन का वातावरण इतना शान्त एवं मनोरम है कि यात्री को मानसिक रूप से विश्रान्ति प्राप्त होती है। स्मृति-भवन की अपनी नियमावली

सेठ आनन्दराम जैपुरिया स्मृति - भवन

वाराणसी

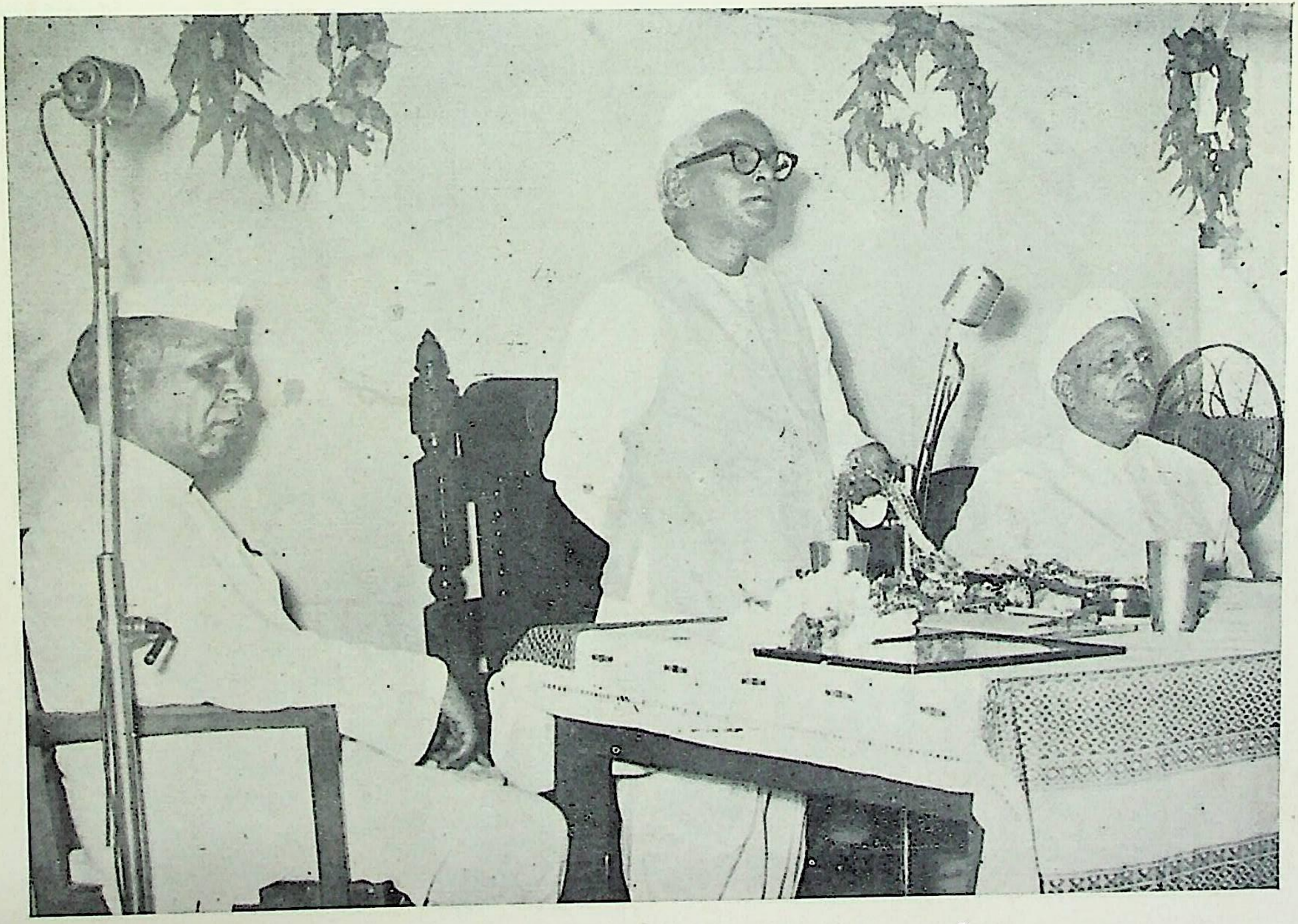

उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री चन्द्रभानु गुप्त के
कर-कमलों द्वारा शिलान्यास-समारोह का एक दृश्य

सेठ आनन्दराम जैपुरिया स्मृति - भवन
वाराणसी

स्मृति - भवन का मुख्य - दृश्य

सेठ आनन्दराम जैपुरिया स्मृति - भवन
वाराणसी

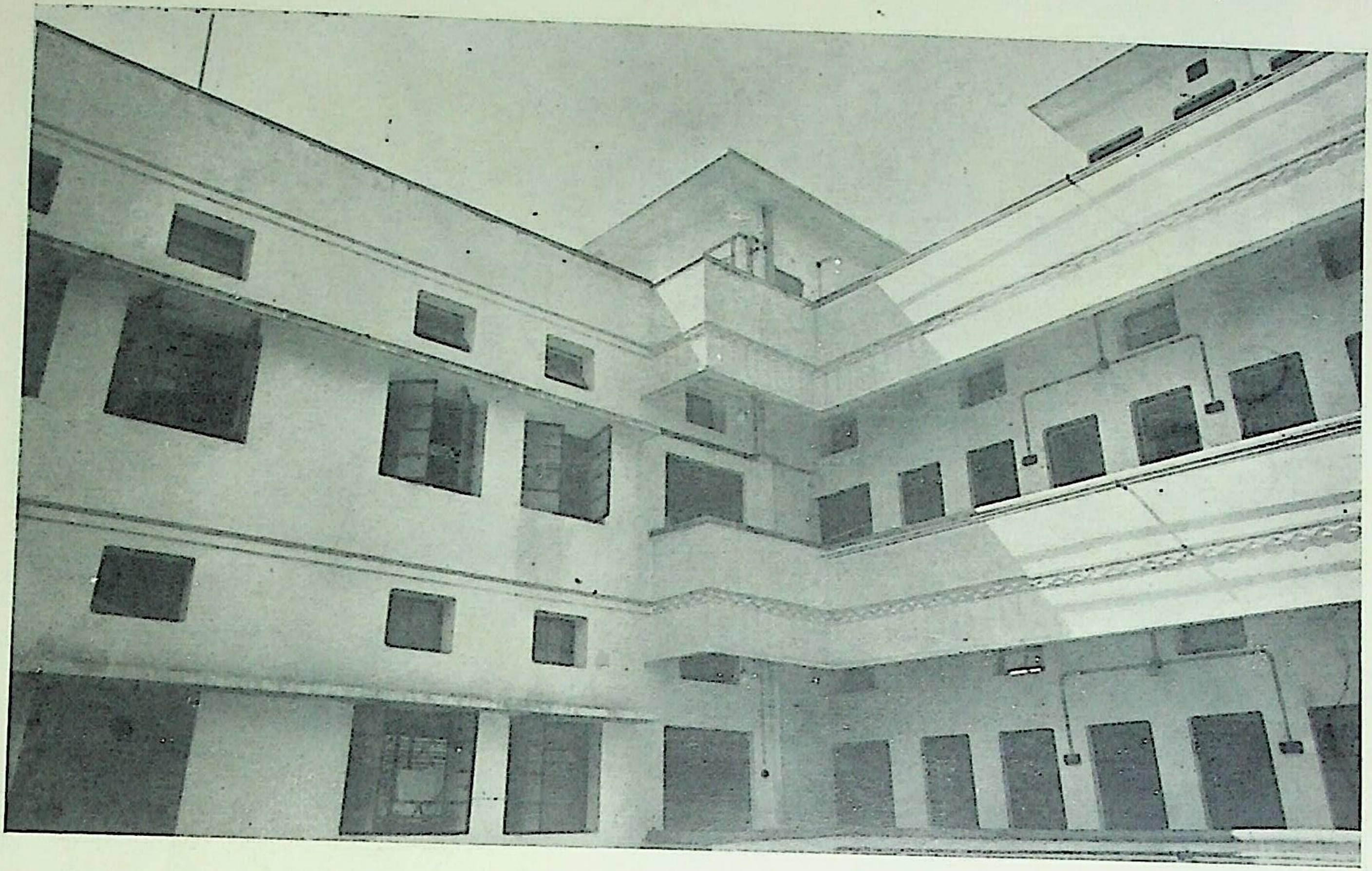

स्मृति - भवन का भीतरी भाग

है जिसके अनुसार यात्री को भवन में निवास करना पड़ता है । भवन में ठहरने के लिये कानपुर, कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली एवं अन्य स्थानों पर स्थित जैपुरिया-प्रतिष्ठान के कार्यालयों एवं देश के प्रमुख नगरों में अनुमति देने के हेतु अधिकृत व्यक्तियों से पूर्व अनुमति लेनी आवश्यक है । भवन में केवल नाम-मात्र को रख-रखाव का शुल्क देकर पर्यटक एवं यात्री निवास कर सकते हैं ।

सेठ आनन्दराम जैपुरिया स्मृति-भवन, जैपुरिया-बान्धवों द्वारा अपने कुल के प्रतिष्ठापक की स्मृति में सर्मपित एक महान श्रद्धांजलि है ।

★

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा ।
अनुग्रहश्च दानं च शीलमेतत् प्रशस्यते ॥

—महाभारत

[मन, वाणी और क्रिया द्वारा किसी भी प्राणी से द्रोह न करना, सब पर दया करना और यथाशक्ति दान देना, जिसकी सब लोग प्रशंसा करें—वही शील है ।]

★

सेठ आनन्दराम जैपुरिया स्मृति भवन
वृन्दावन (मथुरा)

आनन्दकन्द वृन्दावन-बिहारी भगवान श्री कृष्णचन्द्र की परम-पवित्र लीला-भूमि वृन्दावन में स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जी जैपुरिया की पुण्य-स्मृति में जैपुरिया-बान्धवों द्वारा संस्थापित सेठ आनन्दराम जैपुरिया स्मृति-भवन लोक-कल्याण का पावन प्रतीक है।

आधुनिक सुख-सुविधाओं से सम्पन्न, स्वच्छ वायु और विद्युत से युक्त यह भवन वृन्दावन नगर का सर्वश्रेष्ठ भवन माना गया है। परम पूज्या श्री श्री मां आनन्दमयी एवं प्रातःस्मरणीय परमपूज्य श्री १००८ हरिबाबा जी के पवित्र सानिध्य में भवन का शिलान्यास रविवार, २९ नवम्बर सन् १९६४ को प्रातःकाल ११ बजे के शुभ-मुहूर्त में सानन्द सम्पन्न हुआ था।

अतिथि - भवन में कुल ३२ कमरे हैं जिनमें यात्रियों की सुख-सुविधा का ध्यान रखते हुये प्रबन्धकों ने आधुनिकतम रूप देने का प्रयत्न किया है। भवन में निवास करने के हेतु जैपुरिया प्रतिष्ठान के कानपुर, कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई तथा अन्य कार्यालयों एवं देश के प्रमुख नगरों में अनुमति देने के हेतु अधिकृत व्यक्तियों से पूर्व अनुमति लेनी आवश्यक है। भवन की अपनी एक नियमावली है जिसका पालन करना यात्रियों के लिये अनिवार्य है। वाराणसी के अतिथि-भवन की भांति यहां भी भोजनालय की व्यवस्था है जहां स्वच्छ और सुस्वादु भोजन उपलब्ध है। आंशिक रूप से रख-रखाव का शुल्क देकर ही यात्री यहां निवास कर सकते हैं।

श्री बिहारी जी के मन्दिर के अत्यन्त सन्निकट होने के कारण यात्रियों के लिये इस अतिथि-भवन का महत्व बहुत उपयोगी है। प्रबन्धकों की ओर से यहां अत्यन्त विनम्र और सेवाभाव वाले कर्मचारी नियुक्त किये गये हैं और इस तथ्य का पूरा ध्यान रक्खा गया है कि इस अतिथि भवन में निवास करने वाले यात्रियों को किसी प्रकार का कष्ट या असुविधा न हो।

जैपुरिया-बान्धवों ने वृन्दावन जैसे पावन तीर्थस्थल में इस प्रकार का सर्वसुख सम्पन्न अतिथि-भवन बनवा कर प्रदेश के सचमुच एक बड़े अभाव की पूर्ति की है। देश के कोने कोने से पधारने वाले सम्भ्रान्त व्यक्तियों एवं यात्रियों के लिये यह भवन सचमुच बहुत सुविधाप्रद है।

★

सेठ आनन्दराम जैपुरिया स्मृति - भवन
वृन्दावन (मथुरा)

स्मृति - भवन का मुख्य - द्वार

भक्तराज पवन-सुत श्री हनुमान जी का मन्दिर
गोशाला नगर, वृन्दाबन

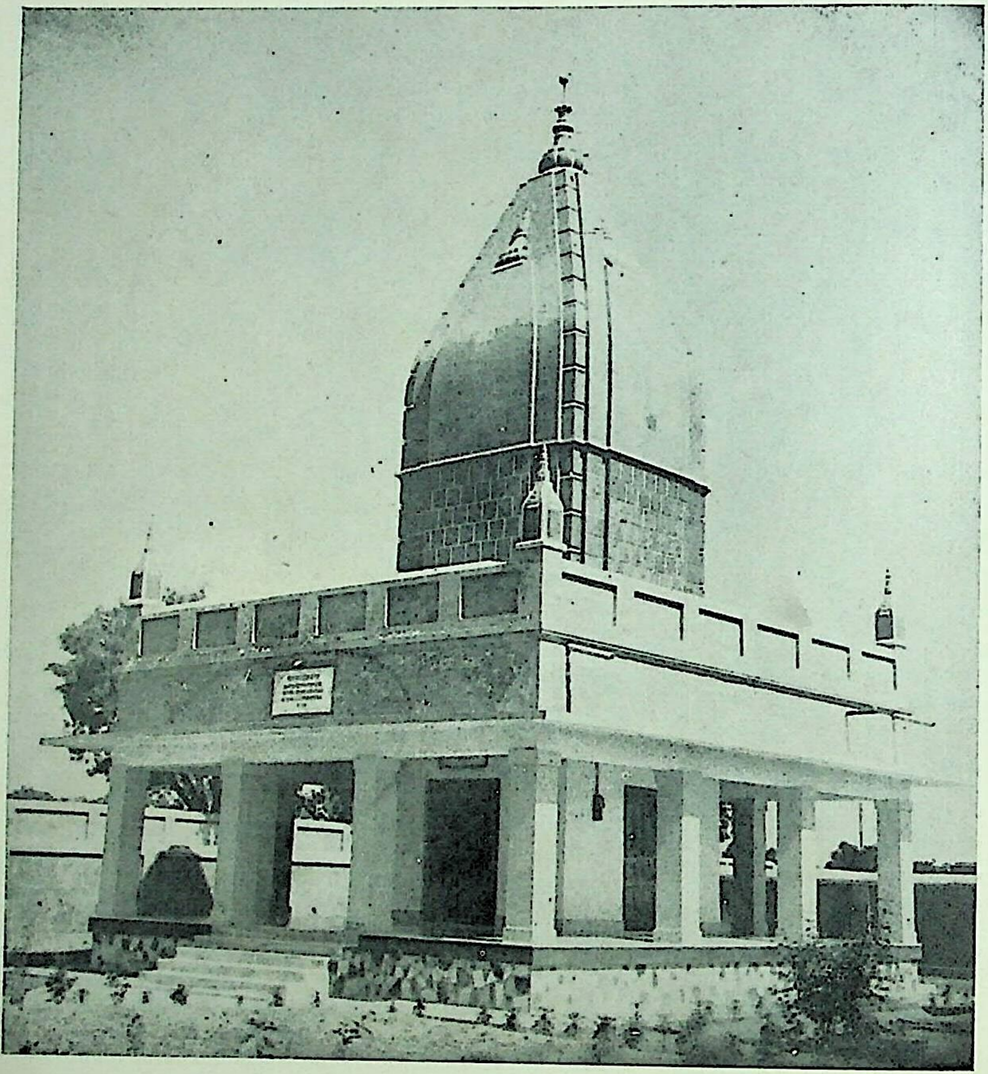

मन्दिर की मनोहारी झाँकी

भक्तराज पवनसुत श्री हनुमान जी का मन्दिर

गोशालानगर, वृन्दावन

श्री वृन्दावन की परिक्रमा में परमपूज्य बाबा नीम करौली जी की पुण्य प्रेरणा से जैपुरिया बान्धवों ने स्वर्गीय सेठ पूर्णमल जी जैपुरिया की स्मृति में भक्तराज पवनसुत श्री हनुमान जी के मन्दिर का निर्माण करवाया है। यह मन्दिर गोशाला नगर के निकट प्रतिष्ठापित है।

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः॥

—श्रीमद्भगवद्गीता

[जिससे सब प्राणी जन्म लेते हैं, जिससे यह सारा जगत् व्याप्त है, उस परमात्मा की, अपने कर्म से पूजा करके मनुष्य सिद्धि को प्राप्त कर लेता है।]

★

जैपुरिया अतिथि भवन
विंध्याचल (मिर्जापुर)

जगज्जननि माँ विन्ध्यवासिनी देवी की परम मंगलमयी छत्र–छाया में जैपुरिया बान्धवों ने दर्शनार्थ पधारने वाले यात्रियों की सुख–सुविधा के लिए 'जैपुरिया अतिथि भवन' का निर्माण करवाया है जहां मांगलिक कृत्यों के लिए देश के कोने कोने से यात्रीगण एकत्रित होते हैं ।

अतिथि–भवन का उद्‌घाटन कार्तिक बदी १ विक्रम सम्वत् २०२१ तदनुसार बुधवार दिनांक २१ अक्तूबर सन् १९६४ के शुभ–मुहूर्त में हुआ था । इस अतिथि–भवन में कुल २६ कमरे हैं । इन कमरों के अतिरिक्त यहाँ स्नानागार एवं शौचालय का सुविधाजनक प्रबन्ध है । अतिथि-भवन के कर्मचारी यात्रियों की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं । अन्य अतिथि-भवनों की भाँति इस अतिथि-भवन में निवास करने के लिए जैपुरिया–प्रतिष्ठान के कानपुर, कलकत्ता, दिल्ली, बम्बई तथा अन्य कार्यालयों एवं देश के प्रमुख नगरों में अनुमति देने के हेतु अधिकृत व्यक्तियों से अनुमति लेनी पड़ती है । यात्रियों को अतिथि-भवन के नियमानुसार ही ठहरना पड़ता है ।

विन्ध्याचल में जैपुरिया अतिथि भवन का निर्माण कर जैपुरिया ट्रस्टों ने सचमुच यहाँ के एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है ।

★

जैपुरिया अतिथि भवन
विन्ध्याचल (मिर्जापुर)

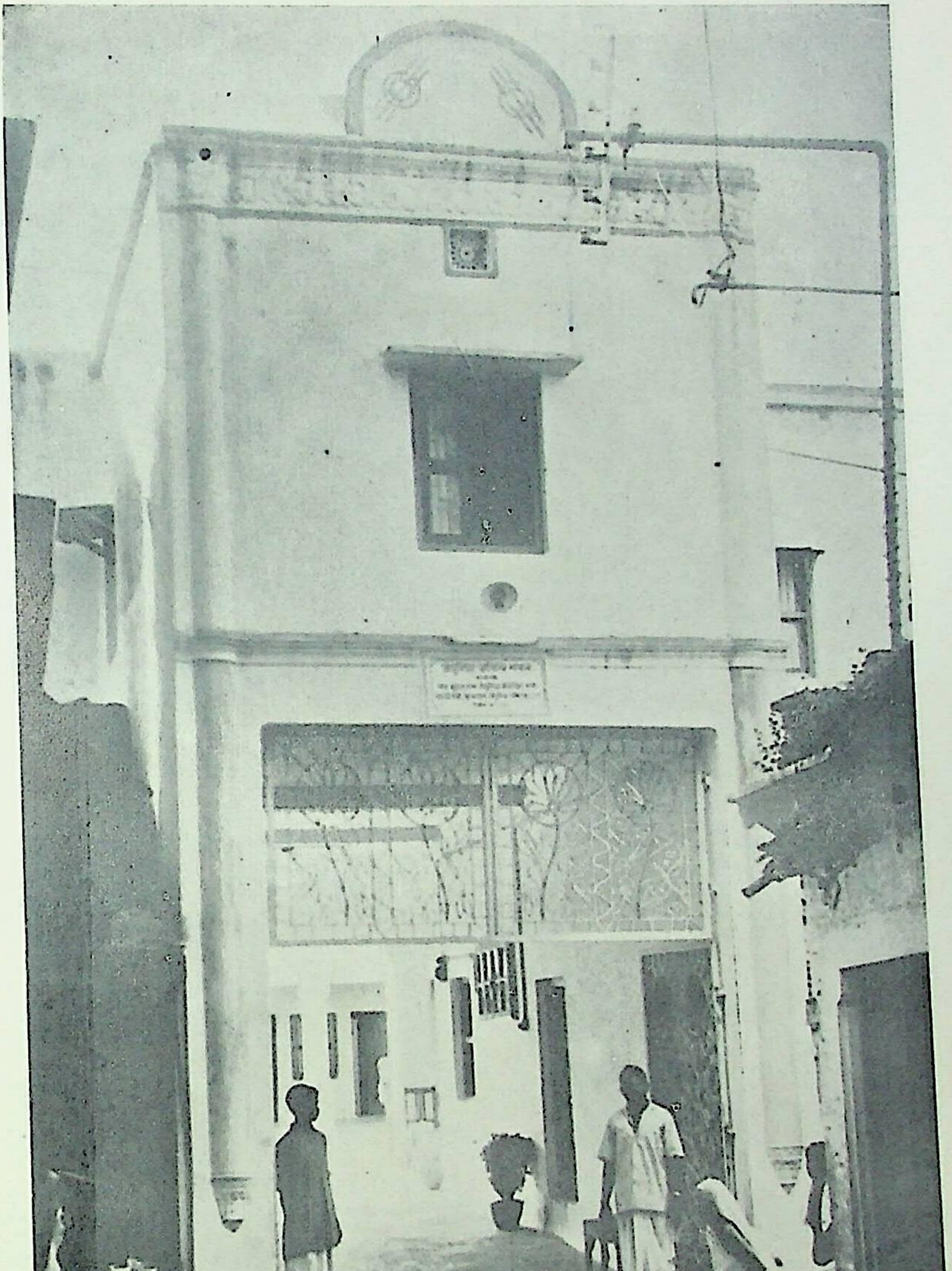

अतिथि-भवन का मुख्य द्वार

सेठ आनन्दराम जैपुरिया विद्या - मन्दिर, छावनी, कानपुर

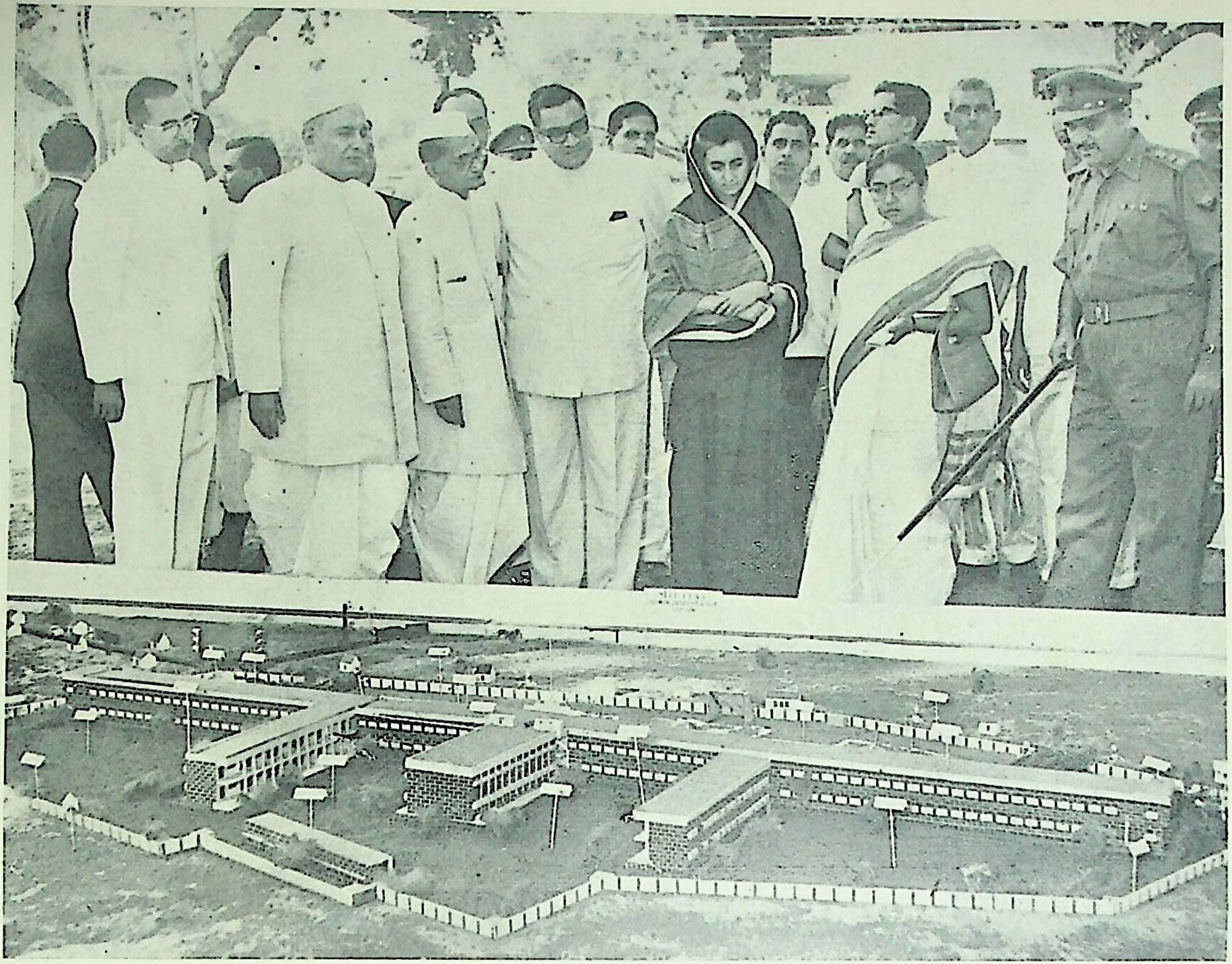

प्रधान - मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी के कर - कमलों द्वारा विद्या - मन्दिर के शिलान्यास के पश्चात मान - चित्र का निरीक्षण

सेठ आनन्दराम जैपुरिया स्मृति-भवन

हरिद्वार

वाराणसी, वृन्दावन और विन्ध्याचल की भाँति भारत के प्रसिद्ध तीर्थस्थान हरिद्वार में गंगातट पर रामघाट के ऊपर जैपुरिया बान्धवों द्वारा सेठ आनन्दराम जैपुरिया स्मृति भवन बनवाने की योजना निर्माणाधीन है जिसका निर्माण-कार्य प्रारम्भ होने वाला है। यह भवन भी अन्य अतिथि भवनों की भाँति जनता-जनार्दन में लोकप्रिय होगा, ऐसी आशा है।

★

सेठ आनन्दराम जैपुरिया विद्या-मन्दिर

छावनी, कानपुर

कानपुर के छावनी क्षेत्र में बच्चों की उचित शिक्षा-दीक्षा के लिए जैपुरिया बान्धवों द्वारा यह अत्याधुनिक ढंग का विद्या-मन्दिर (पब्लिक-स्कूल) निर्माणाधीन है। इसका शुभ-शिलान्यास भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने दिनांक १३ सितम्बर सन् १९६६ को अपने कर-कमलों से किया था।

अन्य आयोजन

सेठ आनन्दराम जैपुरिया नागरिक केन्द्र, दिल्ली

(अ) सेठ आनन्दराम जैपुरिया पब्लिक हाल

(ब) सेठ आनन्दराम जैपुरिया पुस्तकालय

(स) सेठ आनन्दराम जैपुरिया आर्ट गैलरी

सेठ आनन्दराम जैपुरिया विज्ञान-भवन

(पं० मदन मोहन मालवीय डिग्री कालेज, रायबरेली)

प्रकाशक :
ए० एम० जैपुरिया
पब्लिक चैरिटेबिल ट्रस्ट,
४९/३७, जनरलगंज
कानपुर

सम्पादक :–
दवे प्रताप नागर

मुद्रक :
कृप्को, ९७/१८, कायस्थाना रोड,
कानपुर

सर्वे भवन्तु सुखिनः

सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु

मा कश्चिद्दुःख भाग्भवेत् ।।